दिल्ली, एन.सी.आर. व सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक

उद्योग विहार

निष्पक्ष मासिक समाचार पत्र

Regd. No.-UPHIN/2004/15489 www.uvindianews.com प्रधान सम्पादक: सत्येन्द्र सिंह

वर्ष : 16 | अंक : 4 | गाजियाबाद, अप्रैल, 2020 | मूल्य : 4 रूपया | पृष्ठ : 08 | E-mail : udyogviharnp@gmail.com

जानिए, कौन सा मास्क कितना सुरक्षित, मास्क पहनते... P-8

दिल्ली में कोरोना के 67 प्रतिशत मरीज मरकज से जुड़े, आज और बढ़ सकती है संख्या: सत्येंद्र जैन

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने शनिवार को बताया कि पिछले दो दिनों में दिल्ली में 600 लोगों को क्वारंटाइन कर दिया गया है। ये सभी निजामुद्दीन मरकज से जुड़े हुए हैं। हम इन सभी के संपर्क में आने वालों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। जैन ने बताया कि कल रात तक दिल्ली में कोरोना वायरस के 386 मरीज थे। इनमें से 259 मरकज के हैं, मतलब 67 प्रतिशत लोग एक ही जगह से हैं। बाकी पूरी दिल्ली के 33 प्रतिशत मरीज हैं। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि सबसे ज्यादा दिक्कत पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट किट की हो रही है। हमारे स्टॉक में लगभग 7–8 हजार ही किट बचे हैं जो 2–3 दिन ही चलेंगे। इनका इस्तेमाल बहुत ज्यादा हो रहा है। इसे

देखते हुए हमने तुरंत 50,000 पीपीई किट की मांग की है।

देश में कोविड–19 से मृतकों की संख्या 68 हुई, संक्रमण के 2,902 मामले

देश में कोविड–19 से मृतकों की संख्या शनिवार को 68 हो गई और कुल संक्रमित लोगों की संख्या 2,902 हो गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह जानकारी दी। मंत्रालय ने बताया कि

अब भी 2,650 लोग कोविड–19 से पीड़ित हैं, जबकि 183 लोग इलाज के बाद ठीक हो गए हैं या उन्हें अस्पताल से घर भेज दिया गया है और एक अन्य व्यक्ति दूसरे देश चला गया है। शनिवार सुबह तक कोरोना वायरस के मामलों पर मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, छह और लोगों की मौत की जानकारी सामने आई है जिनमें से तीन महाराष्ट्र से, दो दिल्ली से और एक गुजरात से है। अब तक सबसे ज्यादा मौत महाराष्ट्र में हुई हैं जिनकी संख्या 19 है। इसके बाद गुजरात (9), तेलंगाना (7), मध्य प्रदेश (6), दिल्ली (6), पंजाब (5), कर्नाटक (3), पश्चिम बंगाल (3), जम्मू–कश्मीर (दो), उत्तर प्रदेश (दो) और केरल में दो लोगों की मौत हुई है। वहीं, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, बिहार और हिमाचल प्रदेश में एक–एक व्यक्ति की मौत हुई है। संक्रमण के कुल मामलों (2,902) में 55 विदेशी नागरिक शामिल हैं। देश में महाराष्ट्र में 423 के आंकड़े के साथ संक्रमित लोगों की संख्या सबसे अधिक है। इसके बाद तमिलनाडु में 411 मामले हैं। दिल्ली में संक्रमित लोगों की संख्या 386, केरल में 295, राजस्थान में 179 और उत्तर प्रदेश में 174 हो गई है। आंध्र प्रदेश में अब तक 161 और तेलंगाना में 158 लोगों में संक्रमण की पुष्टि हुई है। कर्नाटक में मामले बढ़कर 128 हो गए हैं। मध्य प्रदेश से अब तक 104, गुजरात से 95 जबकि जम्मू–कश्मीर से 75 मामले सामने आए हैं। पश्चिम बंगाल में संक्रमित लोगों की संख्या बढ़कर 68 हो गई है। पंजाब में 53 और हरियाणा में 49 लोग कोविड–19 से ग्रस्त हैं। बिहार में 29, असम में 24, चंडीगढ़ में 18, उत्तराखंड में 16 और लद्दाख में अब तक 14 लोगों में संक्रमण की पुष्टि हुई है। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह से 10 मामले सामने आए हैं। छत्तीसगढ़ में 10 जबकि गोवा और हिमाचल प्रदेश से छह–छह मामले सामने आए हैं।

अजमातियों से तंग डॉक्टरों के शरीर पर लगाए गए कैमरे

नई दिल्ली। निजामुद्दीन स्थित मरकज से निकालकर क्वारंटाइन किए गए जमातियों से परेशान डॉक्टरों और मेडिकल स्टाफ को स्वास्थ्य विभाग और रेलवे ने शरीर (कपड़ों) पर लगाने वाले कैमरे दिए हैं। ये कैमरे इसलिए उनके शरीर पर लगाए गए हैं ताकि तुगलकाबाद रेलवे कॉलोनी में बनाए गए क्वारंटाइन केंद्र में रह रहे जमातियों की बदसलूकी सामने आ सके। इनकी हरकतें कैमरे में रिकॉर्ड होगी। इस केंद्र के मेडिकल स्टाफ ने शिकायत की थी कि जमाती मेडिकल स्टाफ पर थूकने और अपने कपड़े उतारने जैसी हरकत कर रहे हैं। वे बिरयानी और गुटखे की मांग कर रहे हैं।

तबलीगी जमात पर कसा एक और शिकंजा

बताने होंगे फंडिंग के स्रोत और विदेशियों की डीटेल

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। कहते हैं ना कि 'बात निकलेगी तो दूर तलक जाएगी।' तबलिगी जमात और इसके निजामुद्दीन मरकज की करतूतों के कारण दूर–दूर तक कोरोना का संक्रमण फैलने लगा है तो प्रशासन का शिंकजा भी कसता जा रहा है। दिल्ली पुलिस ने अब मरकज के मौलाना साद कंधालवी समेत तबल. ीगी जमात की कोर कमिटी के सात सदस्यों को नोटिस जारी किया है। इस बीच, इन सातों की तलाश में जुटी पुलिस टीम से कहा गया है कि वो छानबीन के दौरान किसी भी अहाते में घुसने से पहले एहतियात बरतें क्योंकि संभव है कि ये सातों भी कोविड–19 से पीड़ित हों।

बैंक खातों, पैन, टैक्स डीटेल की मांग

पुलिस ने उनसे आलमी मरकज और इसके निजामुद्दीन स्थित मुख्यालयों की फंडिंग के साधनों की जानकारी मांगी है। जमात ने पिछले तीन सालों में कितना टैक्स भरा है, उसके बैंक खातों में कहां–कहां से कितने पैसे आए हैं, इन सब डीटेल्स के साथ पैन भी मांगा गया है। मरकज के प्रमुख मौलाना साद और छह अन्य सदस्यों से उन विदेशियों और भारतीय जमातियों की लिस्ट भी मांगी गई है जिन्होंने 11 से 13 मार्च के दौरान आयोजित इजोड़श कार्यक्रम में शिरकत की थी।

- तबलीगी जमात पर दिल्ली पुलिस का शिकंजा कसता जा रहा है
- पुलिस ने जमात के दिल्ली मरकज से फंडिंग और टैक्स डीटेल्स मांगे हैं
- मरकज के मौलान साद कांधलवी और कोर टीम के छह सदस्यों को नोटिस जारी
- नोटिस में मरकज में आयोजित कार्यक्रमों और उनमें शामिल लोगों के डीटेल मांगे गए

प्रशासन से अनुमति ली थी या नहीं

मरकज के मेंबरों से पूछा गया है कि क्या उन्होंने इतने बड़े आयोजन के लिए प्रशासन की अनुमति ली थी, क्या उन्हें इसकी लिखित अनुमति दी गई थी और क्या आलमी मरकज ने प्रशासन से किसी और मामले में संपर्क किया था? उन्हें कमिटी मेंबर्स और मरकज के कर्मचारियों की लिस्ट भी पुलिस को सौंपनी होगी।

इस साल आए सभी श्रद्धालुओं के डीटेल की मांग

पुलिस ने मरकज से कहा कि वह 1 जनवरी से 1 अप्रैल तक वहां हुए सारे आयोजनों में शामिल लोगों की संख्या, नक्शा या साइट प्लान और परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरों की संख्या बताए। 12 मार्च के बाद जिन लोगों ने कार्यक्रमों में हिस्सा लिया, उनके ऑडियो या वीडियो रिकॉर्डिंग के साथ–साथ ऑरिजनल रजिस्टर भी मांगी गई है जिसमें बाहर से आए लोगों के डीटेल दर्ज किए गए। मरकज को इस दौरान पार्किंग की देखरेख करने वालों और वॉलंटियरों की जानकारी भी पुलिस को देनी होगी।

पुलिस ने पूछा, कौन बीमार पड़े और उन्हें कहां ले जाया गया

मौलाना साद और उनकी कोर कमिटी के सदस्यों को यह भी बताना होगा कि क्या कोई श्रद्धालु कार्यक्रम के दौरान वहां बीमार भी पड़ा था और आलमी मरकज ने लोगों को निकालने के लिए कौन–कौन से कदम उठाए थे, खासकर देशव्यापी लॉकडाउन घोषित होने के बाद। 12 मार्च के बाज मरकज के जिन लोगों को अस्पताल ले जाया गया, उनके डीटेल भी मांगे गए।

पुलिस यह पता लगाने में भी जुटी है कि मरकज से कितने लोगों को दिल्ली की दूसरी मस्जिदों या फिर घरों में शिफ्ट किया गया। मकरज के मेंबर्स से यह भी पूछा गया है कि उनके संगठन के नाम से कर्फ्यू पास जारी किए गए थे और 12 मार्च के बाद कौन–कौन से सरकारी अधिकारी उनके यहां पहुंचे थे।

हेल्प लाइन नंबर

विदेश से यात्रा कर लौटने वाले व्यक्ति की सूचना दें
01204186453

मास्क और सैनिटाइजर कालाबाजारी की सूचना दें
01202829040

जरूरी सामान की दुकान बंद कराए या मीडियाकर्मी को रोके तो सूचना दें
9454403434

कोरोना वायरस के सैंपल लेने के लिए जिला एमएमजी अस्पताल स्थित कंट्रोल रूम का नंबर
07011477836

संयुक्त जिला अस्पताल में स्थापित कंट्रोल रूम
01202783098

उद्योग विहार

निष्पक्ष गारिक रागाचार पत्र

E-mail : udyogviharnp@gmail.com

गाजियाबाद, अप्रैल, 2020

MINIMUM WAGES IN DIFFERENT STATES

U.P MINUMUM WAGES GENERAL/ENGINEERING

CATEGORY OF WORKERS	U.P. GENERAL BASIC +DA	U.P. ENGG. BELOW 500 BASIC +DA	U.P. ENGG. ABOVE 500 BASIC+DA
	W.E.F.	W.E.F.	W.E.F.
	01/04/20 TO 30/09/2020	01/02/20 TO 31/07/2020	01/02/20 TO 31/07/2020
UN SKILLED	8625.00	10086.03	10574.06
SEMISKILLED	9487.50	11075.65	11631.46
SEMISKILLED-A	*	*	*
SEMISKILLED-B	*	*	*
SKILLED	10627.50	12295.73	12688.87
SKILLED A	*	*	*
SKILLED B	*	*	*
HIGHLY SKILLED	*	*	*

GUJRAT MINIMUM WAGES

MINIMUM WAGES	ZONE-I	ZONE-II
W.E.F.	01/10/2019 TO 31/03/2020	
BASIC+DA	8278.40	8070.40
	8486.40	8278.40
	*	*
	*	*
	8720.40	8486.40
	*	*
	*	*
	*	*

PUNJAB MINIMUMWAGES

MINIMUMWAGES	
W.E.F.	1/3/2019
BASIC+DA	8776.83
	9556.83
	*
	*
	10453.83
	*
	*
	11485.83

HARYANA MINIMUMWAGES

MINIMUMWAGES	
W.E.F.	1/7/2019
BASIC+DA	9024.24
	*
	9475.43
	9949.19
	*
	10446.65
	10969
	11517.45

UTTARAKHAND MINIMUMWAGES

MINIMUMWAGES	
W.E.F.	01-10-2018 TO 31-03-2019
BASIC+DA	8331.00
	8924.00
	*
	*
	9518.00
	*
	*
	*

DELHI MINIMUM WAGES

MINIMUM WAGES	
W.E.F.	10/1/2018
BASIC+DA	14842.00
	16341.00
	*
	*
	17991.00
	*
	*
	*

RAJASTHAN MINIMUM WAGES

MINIMUM WAGES	
W.E.F.	5/1/2019
BASIC+DA	5850.00
	6162.00
	*
	*
	6474.00
	*
	*
	7774.00

दिहाड़ी मजदूरों को तत्काल वेतन दिलाने की मांग पर सरकार को नोटिस

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। कोरोना महामारी के कारण बेरोजगार हो गए दिहाड़ी और प्रवासी मजदूरों को तत्काल न्यूनतम वेतन का भुगतान सुनिश्चित किए जाने की मांग पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। कोर्ट मामले पर सात अप्रैल को फिर सुनवाई करेगा। सरकार को ये नोटिस न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव व दीपक गुप्ता की पीठ ने हर्ष मंदर और अंजली भारद्वाज की ओर से दाखिल जनहित याचिका पर वीडियो कांफ्रेसिंग के जरिये अर्जेंट सुनवाई में दिए। याचिकाकर्ता की ओर से पेश वकील प्रशांत भूषण का कहना था कि कोरोना महामारी के चलते लाखों प्रवासी और दिहाड़ी मजदूर बेरोजगार हो गए हैं और उनके रहने खाने का संकट खड़ा हो गया है। याचिका में जीवन के अधिकार की दुहाई दी गई है। हालांकि केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने हर्ष मंदर और अंजली भारद्वाज की ओर से दाखिल इस जनहित याचिका का विरोध किया। उन्होंने कहा कि देश कोरोना महामारी के चलते अप्रत्याशित परिस्थितियों से गुजर रहा है। जिन्होंने यह जनहित याचिका दाखिल की है वे इस मुश्किल समय में लोगों की मदद के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। ये पीआइएल की दुकानें बंद होनी चाहिए। जो वास्तविक लोग हैं वे फील्ड में लोगों की मदद कर रहे हैं। इस तरह एसी कमरे में बैठ कर पीआइएल दाखिल करने से कुछ नहीं होगा। सॉलीसिटर जनरल ने कहा कि सरकार लगातार इस दिशा में काम कर रही है और बहुत से कदम उठाए गए हैं। लेकिन पीठ ने उनकी दलीलों पर कहा कि यह मामला प्रवासी मजदूरों और दिहाड़ी मजदूरों की समस्याओं से जुड़ा है। वे देखना चाहते हैं कि सरकार ने क्या कदम उठाए हैं। इस पर मेहता ने कहा कि अगर कोर्ट चाहता है तो वे जवाब देंगे। दाखिल याचिका में कहा गया है कि कोरोना के चलते अचानक घोषित हुए लॉकडाउन से हजारों प्रवासी मजदूरों और दिहाड़ी मजदूरों का रोजगार चला गया है। सरकार की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि जहां ये प्रवासी और दिहाड़ी मजदूर काम करते थे। वे कंपनियां या प्रतिष्ठान लोग उन्हें लॉकडाउन के दौरान का वेतन देंगे।

द्वितीय विश्व युद्ध जितना कम हुआ कार्बन उत्सर्जन

लंदन। भारत समेत सैकड़ों देशों में लॉकडाउन के कारण भले ही अर्थ व्यवस्थाएं थम गई हों। लेकिन विश्व भर में बड़े पैमाने पर औद्योगिक और मानवीय गतिविधियां कम होने से पिछले कुछ ही दिनों में पर्यावरण में बेहतरीन सुधार आया है। पूरे विश्व में कार्बन उत्सर्जन इस साल इतना अधिक कम हो गया है जितना 75 साल पहले द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ था। कार्बन उत्सर्जन के आंकड़े जुटाने वाले विश्व भर के वैज्ञानिकों के अनुसार साल दर साल इसी रफ्तार से कार्बन उत्सर्जन 5 फीसद तक कम हो सकता है। वैश्विक कार्बन उत्सर्जन का हिसाब रखने वाले ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट के चेयरमैन रॉब जैक्सन का कहना है कि 2008 के वित्तीय संकट के बाद 1.4 फीसद कार्बन उत्सर्जन में कमी आई थी जो अब पांच फीसद तक हो सकती है। कैलीफोर्निया की स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी अर्थ सिस्टम साइंस के प्रोफेशर जैक्सन ने कहा कि इस साल कार्बन उत्सर्जन में पांच फीसद या उससे भी ज्यादा की गिरावट आश्चर्यजनक होने वाली है। ऐसा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से नहीं देखा गया है। कहा कि कितने ही बड़े संकट आए हों, चाहे सोवियत संघ का विघटन हो, तेल संकट हो या बैंकों के कर्ज का संकट हो, कभी भी उसका पर्यावरण पर इतना अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा है। लेकिन इस लॉकडाउन ने औद्योगिक इकाइयों, एयरलाइनों और सभी प्रकार की मानवीय गतिविधियों की रोकथाम कर दी है।

राजस्थान में जरूरी इकाइयां शुरू करने की अनुमति

जयपुर। लॉकडाउन अवधि में जरूरी उपभोक्ता सामान और दवाइयों की आपूर्ति बनाए रखने के लिए राजस्थान सरकार ने इनकी फैक्टियां चालू करने की अनुमति देने लगी है। इसके लिए प्रक्रिया को यहां तक आसान बनाया गया है कि आवेदन के छह घंटे में लाइसेंस जारी किया जा रहा है। अब तक 900 से ज्यादा इकाइयों को काम शुरू करने की अनुमति दी जा चुकी है। जैसे–जैसे लॉकडाउन का समय बीत रहा है, जरूरी उपभोक्ता सामान की आपूर्ति प्रभावित होने लगी है। इसे देखते हुए सरकार ने सभी तरह के जरूरी उपभोक्ता सामान की इकाइयां चालू करने की अनुमति देना शुरू किया है। इसके साथ ही प्रसंस्करण इकाइयों को सीधे किसानों से खरीद की अनुमति भी दी जा रही है। कृषि विपणन विभाग की ओर से अभियान चलाकर मंडी क्षेत्रों में आटा, चावल, तेल, दाल आदि की मिलों को किसानों से कृषि जिंसों की सीधी खरीद के लाइसेंस दिए जाएंगे। इससे किसानों को तैयार फसल बेचने के लिए वैकल्पिक विक्रय केंद्र उपलब्ध हो सकेंगे एवं प्रसंस्करण इकाइयों को भी आवश्यकता के अनुसार कच्चा माल आसानी से मिल सकेगा।

दिल्ली–एनसीआर में घटे सीएनजी पीएनजी के दाम

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। प्राकृतिक गैस के दाम घटने के बाद इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आइजीएल) ने कंप्रेस्ड नेचुरल गैस (सीएनजी) और पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) में सात फीसद कटौती की है। दिल्ली–एनसीआर में सीएनजी की आपूर्ति करने वाली कंपनी आइजीएल ने कहा कि दिल्ली में सीएनजी का दाम 3.20 रुपये घटाकर 42 रुपये प्रति किलो किया गया है। नोएडा, ग्रेटर नोएडा और गाजियाबाद में इसके दाम में 3.60 रुपये की कटौती की गई है। यहां अब सीएनजी 47.75 रुपये प्रति किलो मिलेगी। मुजफ्फनगर में यह 4. 05 रुपये घटकर 56.65 हो गया है। वहीं, करनाल में 54.95 से घटकर 49. 85 हो गया है। रेवाड़ी व गुरुग्राम में 3.05 घटकर 54.15 प्रति किलो रह गया है। इंद्रप्रस्थ गैस ने यह भी घोषणा की है कि दिल्ली में पीएनजी का दाम 1.55 रुपये घटकर 28.55 रुपये प्रति क्यूबिक (घनमीटर) रह गया है। इसी प्रकार नोएडा, ग्रेटर नोएडा और गाजियाबाद में पीएनजी का दाम 1.65 रुपये घटकर 28.45 रुपये प्रति क्यूबिक रह गया है।

LEGAL INFOSOLUTIONS PVT LTD.

❖LABOUR LAWS ❖HR MANAGEMENT
❖PAYROLL OUTSOURCING MANAGEMENT
❖SOCIAL AUDIT & COMPLIANCE'S)

http://www.legalipl.com

BE-243, G.F., Avantika, Ghaziabad- U.P.- 201002
The Ithum IT Park, Suite # 007, 3rd Floor, Tower C, Plot No. 40 A, Sector 62, Noida, 201301-U.P. India
9818036460
legalipl243@gmail.com

श्री हरिमंदिर साहिब को कभी बंद नहीं किया जा सकता : एसजीपीसी

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंह ने कहा कि श्री हरिमंदिर साहिब न तो कभी बंद हुआ है और न ही भविष्य में कभी बंद होगा। श्री हरिमंदिर साहिब का कोई भी गेट नहीं है। इसके चारों द्वार हमेशा खुले रहते हैं। अन्य सभी सिखों के एतिहासिक गुरुद्वारा साहिब भी कभी बंद नहीं होंगे।

गुरुद्वारे खुलेंगे तो तभी मानवता की सेवा होगी। सेहत विभाग और सरकार की ओर से कोरोना वायरस के बचाव के लिए जो हिदायतें जारी की है उनको सभी सिख धार्मिक स्थानों पर लागू किया जा रहा है। जब भी कोई आफत मानवता पर आती है तो सिख पंथ बढ़चढ़ कर मानवता की सेवा के लिए आगे आता है। संगत को भी चाहिए कि धार्मिक स्थानों पर आने पर वह निर्धारित दूरी एक दूसरे से बनाए रखें।

बहुतेरे संक्रमितों में नहीं उभरते कोरोना के लक्षण

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। अमेरिका के सेंटर्स फार डिसीज कंट्रोल (सीडीसी) के निदेशक ने कहा है कि कोरोना वायरस की चपेट में आये लगभग 25 फीसदी लोगों में इस रोग के लक्षण नहीं दिखाई देते। ऐसे लोगों की भारी तादाद के कारण इस भयानक बीमारी की रोकथाम करने और इसके विस्तार के बारे में कोई अनुमान लगाने में कठिनाई आ सकती है। उधर सीएनएन ने आइसलैंड की रिपोर्ट के हवाले से खबर दी है कि वहां कोरोना पाजिटिव निकले करीब 50 फीसदी लोगों ने कहा कि उन्हें खुद में इस बीमारी के लक्षण नहीं मिले। उधर हांगकांग की एक रिसर्च टीम का कहना है कि चीन में 20 से 40 फीसद मरीजों में इस रोग के लक्षण उभरने से पहले ही उनके जरिये दूसरे लोगों में संक्रमण फैल गया। कोरोना के संबंध में सामने आये इस तथ्य से सीडीसी की चिंता बहुत बढ़ा दी है। बिना लक्षण वाले संक्रमितों की बड़ी संख्या को ध्यान में रख किन लोगों को मास्क पहनना है इसके लिए दिशा निर्देशों में बदलाव किया जा रहा है।

सीडीसी निदेशक राबर्ट रेडफील्ड ने एक साक्षात्कार में बताया कि इस तथ्य से हमें यह साफ हो रहा है कि यह बीमारी कितनी तेजी से देश में फैल रही है। रेडफील्ड ने कहा कि अभी तक सीडीसी को ओर से यह बार–बार कहा गया कि जिन समान्य

लोगों में बीमारी के लक्षण नहीं हैं उन्हें मास्क पहनने की जरूरत नहीं है। लेकिन इस नये तथ्य के सामने आने के बाद हम अपने निर्देशों की ठीक से समीक्षा करेंगे। सातवें दिन वायरस पनपा शोधकर्ताओं का कहना है कि वे अभी यह नहीं जानते कि कितने लोग खुद को अस्वस्थ महसूस किए बिना संक्रमित हुए। लेकिन दिसंबर से यह बीमारी सामने आने से कई ऐसे मामले आ चुके हैं जिनमें खुद को स्वस्थ महसूस कर रहे लोगों से दूसरे लोग संक्रमित हुए।

चीन के गुआंगडोंग जिले के जेड नामक मरीज का किस्सा कुछ ऐसा ही था। वह फरवरी के शुरू में वुहान के एक व्यक्ति के संपर्क में आकर संक्रमित हुआ लेकिन उसमें संक्रमण के लक्षण पैदा नहीं हुए। हालांकि सातवें दिन तक उसकी नाक और गले में वायरस प्रचुर मात्रा में पनप चुका था। मरीज जेड का मामला अकेला नहीं शोधकर्ताओं का मानना है कि मरीज जेड का मामला अकेला नहीं। डायमंड प्रिंसेज क्रूज पर भी जितने लोग संक्रमित हुए उनमें से करीब 18 फीसद लोग ऐसे थे जिनमें बीमारी के लक्षण नहीं पनपे।

मिनेसोटा विश्वविद्यालय के संक्रामक रोग विशेषज्ञ डॉ.माइकल टी ओस्टरहोम ने कहा कि यह वायरस इनफ्लुएंजा वायरस की तरह तेजी से फैलता है। लेकिन इसका गुपचुप तरीके से फैलने का गुण इनफ्लुएंजा वायरस से भिन्न है।

विशेषज्ञों का मानना है कि अब तक इसकी कोई वैक्सीन ईजाद न होने के कारण इससे बचने के लिए सुरक्षित शारीरिक दूरी रखना ही सबसे उचित उपाय है। कुछ संक्रमित लोग जो खुद को स्वस्थ समझ रहे हों लेकिन दूसरों को संक्रमित कर रहे हों। यही कारण है कि बहुत से विशेषज्ञ सीडीसी और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के दिशा निर्देशों को दरकिनार कर सभी के लिए मास्क पहनने को जरूरी बता रहे हैं। इससे बिना लक्षण वाले संक्रमितों से और लोग संक्रमित नहीं हो सकेंगे।

कोरोना को कोई भी हरा सकता है, मैंने हराया

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। राजधानी के पहले कोरोना वायरस से संक्रमित मरीज अब स्वस्थ होकर अपने घर लौट चुके हैं। उनका कहना है कि घर लौटना उनके लिए सपने जैसा है। वह इसके लिए सरकार और स्वास्थ्य विभाग का आभार जता रहे हैं। मयूर विहार फेज–दो में रहने वाले टेक्सटाइल कारोबारी को 14 मार्च को सफदरजंग अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी। फिलहाल वह 14 दिनों के लिए अपने घर में आइसोलेट रहेंगे। फोन पर हुई बातचीत में उन्होंने बताया कि दो दिन निकल गए हैं। अभी करीब 12 दिन बचे हैं। उन्होंने बताया कि वह 16 फरवरी को इटली गए थे। 25 फरवरी को जब वह वापस आए थे तो रात में उन्हें बुखार हुआ। इसके बाद 28 फरवरी को बच्चे के जन्मदिन की पार्टी होटल हयात में थी। पार्टी से लौटकर जब घर आए तो काफी तेज बुखार आ गया। 29 फरवरी को वह आरएमएल अस्पताल जांच कराने पहुंचे, जहां उनकी रिपोर्ट में कोरोना की पुष्टि हुई। बाद में उन्हें सफदरजंग अस्पताल में भर्ती किया गया। सफदरजंग अस्पताल के डॉक्टरों ने ने उन्हें भरोसा दिया कि यहां से वह ठीक होकर लौटेंगे। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ गया। इलाज के बाद नौ मार्च को उनका टेस्ट हुआ। अगले दिन रिपोर्ट नेगेटिव आई। इसके बाद 11 मार्च को फिर से टेस्ट हुआ। 12 मार्च को फिर से रिपोर्ट नेगेटिव थी। इसके बाद उन्हें छुट्टी देने का फैसला किया गया। वह 14 मार्च को घर लौट आए। उनके संपर्क में आने वाले कुल छह लोग संक्रमित थे। इनमें से चार घर लौट चुके हैं।

दो अभी अस्पताल में हैं। दोनों से फोन पर लगातार बात हो रही है। उनसे बात कर उन दोनों का भी आत्मविश्वास बढ़ा है। उन्हें उम्मीद है कि जल्द ही वे भी अपने घर लौट जाएंगे। उन्होंने कहा कि अगर अभी भी कुछ लोग कोरोना वायरस संक्रमित होने के बाद सामने नहीं आ रहे हैं तो यह दुखद है। वह अपने परिवार के साथ अन्य लोगों के लिए दिक्कतें पैदा कर रहे हैं। मेरी तरह वह भी सामने आएं, इलाज कराएं और स्वस्थ होकर घर लौटें। जब डॉक्टरों ने पिलाया जूस आज के समय में जब कोई पानी नहीं पूछता, सफदरजंग अस्पताल के दो डॉक्टरों ने अपने पैसों से जूस मंगवाकर उन्हें पिलाया। एक दिन वार्ड में मास्क लगाए दो डॉक्टर आए। मैंने कहा कि, मन खराब सा लग रहा है। जूस मिल सकता है क्या। इस पर दोनों डॉक्टरों ने अपनी जेब से पैसे देकर जूस मंगवाया। वार्ड में फोन और किताबों के साथ बिताया समय उन्होंने कहा कि सफदरजंग अस्पताल में सरकार की तरफ से बेहतरीन सुविधाएं दी गई हैं। उनके साथ डॉक्टरों और नर्सों का व्यवहार भी बहुत अच्छा रहा। यही वजह है कि वह जल्दी ठीक हो गए। उन्होंने बताया कि वार्ड में उनके पास मोबाइल था जिससे वह अपने स्वजनों से लगातार वीडियो कॉल के जरिये संपर्क में रहे। इसके साथ किताबें भी उन्हें पढ़ने के लिए उपलब्ध कराई गई थीं। मोबाइल और किताबों को सैनिटाइज कर उन्हें दिया गया था। घर वालों से बातचीत करके अच्छा लगता था। उन्होंने बताया कि परिवार के कई सदस्यों ने उनके लिए कई धार्मिक स्थलों पर जाकर मन्नतें मांगी हैं। वह घर से बाहर निकलेंगे तो पहले उन स्थानों पर जाएंगे।

आयकर बचाने को निवेश की तारीख 30 जून तक

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

- वित्तीय वर्ष 2019–20 का रिटर्न जमा करते समय मिलेगी राहत
- जो निवेश 31 मार्च तक होने चाहिए उनके लिए जून तक का मौका

नई दिल्ली। आयकर बचाने के लिए निवेश की तारीख बढ़ाकर 30 जून 2020 कर दी गई है। हर वित्तीय वर्ष में अगर तारीख नहीं बढ़ाई जाए तो रिटर्न 31 जुलाई तक फाइल करना पड़ता है। टैक्स ऑडिट वाली कंपनियों का रिटर्न 30 सितंबर तक फाइल होता है। वित्तीय वर्ष 2019–20 का रिटर्न भी 31 जुलाई तक दाखिल करना है। रिटर्न में टैक्स को बचाने के लिए लोग कई तरीके के निवेश करते हैं। इनसे डेढ़ लाख रूपये तक की छूट मिलती है।

इसके अलावा मेडिक्लेम पर 25 हजार रूपये तक की छूट दी जाती है। इन निवेश को करदाता 31 मार्च तक ही कर सकता है लेकिन इस वर्ष लॉकडाउन के चलते वित्तीय वर्ष के अंतिम 10 दिन कई करदाता चाहते हुए भी निवेश करने के लिए 30 जून तक की छूट दी गई है। एलआइसी, मकान किराया, कैपिटल गेन से संबंधित छूट के लिए निवेश आदि को इसमें शामिल किया जाएगा।

> वेतनभोगी और कारोबारी दोनों ही तमाम तरह के निवेश करके टैक्स बचाने का प्रयास करते हैं। इस बार उन्हें मौका नहीं मिल पाया है। इसलिए उन्हें 30 जून तक इस वित्तीय वर्ष के निवेश करने की छूट दी गई है।
> –संतोष गुप्ता, टैक्स सलाहकार।

बिना शुल्क जमा करें रिटर्न : जिन लोगों ने 2018–19 का रिटर्न विलंब शुल्क लगने के बाद भी जमा नहीं किया है, उनके लिए तारीख बढ़ी है। अभी तक रिटर्न जमा करने की तारीख 31 मार्च 2020 थी। इसमें पांच लाख रूपये तक के करदाताओं पर एक हजार रूपये विलंब शुल्क लगना था। पांच लाख से ऊपर वालों पर 10 हजार रूपये विलंब शुल्क लगना था।

एचयूएल ने 3,045 करोड़ में खरीदा हॉर्लिक्स

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। एफएमसीजी सेक्टर की बड़ी कंपनी हिंदुस्तान यूनीलिवर (एचयूएल) ने सौदे के एलान के 15 महीने बाद ग्लैक्सोस्मिथक्लीन (जीएसके) कंज्यूमर हेल्थकेयर लिमिटेड का विलय पूरा कर लिया है। इसी के साथ एचयूएल ने 3,045 करोड़ रुपये में हॉर्लिक्स ब्रांड भी खरीद लिया है। जीएसके के साथ हुए समझौते में एचयूएल को यह ब्रांड खरीदने का विकल्प मिला था। इस विलय के बाद एचयूएल में जीएसके की 5.7 फीसद हिस्सेदारी होगी। दोनों कंपनियों को सौदे के लिए सभी जरूरी नियामकीय मंजूरियां मिल चुकी हैं।

हेल्पलाइन नंबर पर चटनी के साथ मांगा गरम समोसा

रामपुर। लॉकडाउन के चलते लोगों को किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। इसके लिए स्थानीय प्रशासन ने तहसील में कंट्रोल रूम स्थापित कर मोबाइल नंबर जारी किए हैं, जिससे लोगों को खाने पीने का सामान पहुंचाया जा सके। रविवार को मुहल्ला खास स्वार निवासी हफीज ने कंट्रोल रूम के हेल्पलाइन नंबर पर फोन कर चार गरम–गरम समोसे चटनी डालकर लाने की मांग की। पुलिस ने युवक के खिलाफ शांतिभंग की कार्रवाई की है। बाद में माफी मांगने पर उसको निजी मुचलके पर छोड़ा गया।

TAKSHAK
MANAGEMENT INDIA PVT LTD
EVENTS MANAGEMENT
PR MANAGEMENT
ARTISTS MANAGEMENT
http://www.takshakindia.com
BE-243, G.F., Avantika, Ghaziabad- U.P.-201002
The Ithum IT Park, Suite # 007, 3rd Floor, Tower C,
Plot No. 40 A, Sector 62, Noida, 201301-U.P. India
9818036460
takshakindia@gmail.com

उद्योग विहार
निष्पक्ष गारिक रागाचार पत्र
Editorial
04 P.
E-mail : udyogviharnp@gmail.com
गाजियाबाद, अप्रैल, 2020

सम्पादकीय

खतरे की घंटी

सत्येन्द्र सिंह

कोरोना महामारी को फैलने से रोकने के लिए जब देश में पूर्ण बंदी है और हर राज्य सख्ती से इसे लागू करवा रहा है, ऐसे में राजधानी दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में तबलीगी जमात के मरकज (केंद्र) से बड़ी संख्या में कोरोना संक्रमित मरीजों और संदिग्धों का मिलना गंभीर मामला है। सबसे चिंताजनक तो यह है कि यहां से चौबीस लोग कोरोना संक्रमित और साढ़े तीन सौ लोग कोरोना संदिग्ध मिले हैं, जिन्हें अलग-अलग अस्पतालों में भेजा गया है और जांच करवाई गई है। दिल्ली में दो दिन में एक ही जगह से इतनी बड़ी संख्या में कोरोना संक्रमितों के मिलने का यह अब तक का सबसे बड़ा आंकड़ा है। मरकज में जिस तादाद में लोग जमा थे, उसे देखते हुए यह संख्या तेजी से बढ़ने की आशंका है।

यह घटना बता रही है कि पूर्ण बंदी को धता बताते हुए धार्मिक समुदाय के आयोजन कैसे महामारी फैलाने का बड़ा कारण बन रहे हैं और लोगों की जान जोखिम में डाल रहे हैं। सवाल है कि राजधानी में इतनी सतर्कता और सुरक्षा के बावजूद मरकज में हजारों लोग कैसे जमा होते रहे और पुलिस को भनक तक नहीं लगी! जबकि पिछले एक हफ्ते से पूर्ण बंदी लागू है, लेकिन निजामुद्दीन के मरकज में सब कुछ गुपचुप तरीके से चलता रहा और इस जमावड़े ने कोरोना के खतरे को कई गुना बढ़ा दिया। बताया जा रहा है कि 13 से 15 मार्च तक तबलीगी मरकज में करीब आठ हजार लोग जुटे थे। इनमें से बड़ी संख्या में विदेशी और भारत के सभी प्रांतों से आए लोग थे।

पुलिस ने पिछले तीन दिन में मरकज में जमा अठारह सौ से ज्यादा लोगों को पकड़ा है, जिनमें दो सौ इक्यासी विदेशी नागरिक शामिल हैं। यह भी सामने आया है कि मरकज के इस आयोजन के बाद अपने ठिकानों को लौटे कई लोगों में कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई थी और इलाज के दौरान कुछ लोगों की मौत भी हो गई। इनमें तेलंगाना में कोरोना से मरे छह लोग भी हैं। एक कोरोना पीड़ित की मौत सोपोर में हुई। जाहिर है, मरकज से लौटे लोग कोरोना के वाहक बने और जिस-जिस के संपर्क में आए होंगे, उनको कोरोना वायरस से संक्रमित किया होगा। इसका पता लगा पाना अब सरकारी तंत्र के लिए भी आसान नहीं होगा। हालांकि निजामुद्दीन स्थित इस तबलीगी मरकज में आने वाले प्रतिनिधि आमतौर पर अपने आगमन की सूचना सरकार को देते हैं। लेकिन इस बार ऐसा क्या हुआ कि इतने दिनों तक दो हजार से ज्यादा लोगों का जमावड़ा यहां लगा रहा और गृह मंत्रालय को कोई खबर नहीं मिली।

जबकि कोरोना संकट के चलते इन दिनों दूसरे देशों से आने वाले भारतीय और विदेशी नागरिकों के भारत में प्रवेश पर कड़ी नजर रखी गई। इसके बावजूद कैसे इतनी बड़ी संख्या में विदेशी मरकज में पहुंच गए और यहां जमे रहे? तबलीगी मरकज के इस आयोजन ने दिल्ली सहित पूरे देश को गंभीर खतरे में डाल दिया है। सवाल है कि आखिर इसके लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाए? मरकज के पदाधिकारियों को, केंद्र और दिल्ली सरकार को, दिल्ली पुलिस को या फिर खुफिया तंत्र को? तबलीगी मरकज ने जिस तरह की लापरवाही बरती और यहां आए लोग कोरोना संक्रमण फैलने का कारण बने, उसे देखते हुए सरकार को ऐसी संस्थाओं के खिलाफ इतनी सख्त कार्रवाई करनी चाहिए, जो मिसाल के रूप में देखी जाए।

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाइए, कोरोना से बचिए

कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए तमाम उपाय और परहेज लोग कर रहे हैं। घर में रहते हुए किस तरह अपनी प्रतिरोधक क्षमता आप बढ़ा सकते हैं, इसकी जानकारी आयुर्वेदाचार्य और महावीर आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा. देवदत्त भादलीकर दे रहे हैं। वे कहते हैं कि कोरोना या अन्य वायरस से लड़ने के लिए जरूरी है कि हम अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के सभी उपाय रसोई में ही मौजूद हैं....

सहजन : सहजन जिसे ड्रमस्टिक भी कहते हैं। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन ए रहता है। यह एंटी वायरल है। इसकी सब्जी बनाकर या दाल में डालकर खाने से वायरस का खात्मा होता है।

कुम्हड़ा का बीज : कुम्हड़े का बीज इम्युनिटी बूस्टर है। बीज का पाउडर बनाकर रोजाना रात को सोते समय खा लें या फिर सौंफ के साथ बीज चबाकर भी खाया जा सकता है।

खाली पेट फल खाएं : रात में हमारी बॉडी अम्लीय प्रक्रियाओं से गुजरती है। ऐसे में खाली पेट कोई एक फल खा लें। यह शरीर के अंदर क्षारीय गुण बढ़ाएगा।

नारियल पानी : ताजा नारियल पानी में आधा नींबू मिलाकर पीएं, यह प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएगा।

लाल शिमला मिर्च : एक संतरे में जितना विटामिन–सी होता है, उसका तीन गुना लाल रंग के शिमला मिर्च में पाया जाता है। लिहाजा ककड़ी, गाजर के साथ सलाद में लाल शिमला मिर्च को भी शामिल करें तो यह बेहद प्रभावी साबित होगा।

दाल : अरहर की एक कटोरी दाल को अपने खाने में जरूर शामिल करें। प्रोटीन का यह बहुत बड़ा माध्यम है।

धूप करें : धूप जलाना एंटी बैक्टेरियल प्रक्रिया मानी जाती है। घर में नियमित रूप से धूप जलाएं। इसमें गोबर के उपले, नीम के पत्ते, पके हुए नारियल का छिलका, हींग, लहसुन के छिलके, नमक, कपूर को शामिल करें।

भाप लें : कोरोना भी गले में कुछ दिन रहकर आगे बढ़ता है। ऐसे में गर्म पानी की भाप जरूर लें। एक चम्मच हल्दी, 10–15 तुलसी के पत्ते डालकर पानी को उबाल लें और फिर तौलिए या चद्दर से ढक्कर भाप लें।

काफी या चाय : तुलसी, सौंठ, काली मिर्च, गुड़, प्याज का एक छोटा टुकड़ा, गिलोय मिलाकर काफी या चाय बनाएं। यह स्वादिष्ट भी होगा और स्वास्थ्यपरक भी। इम्युनिटी का बूस्टर डोज मिलेगा।

गार्गल करें : खांसी–सर्दी हो तो हल्दी, त्रिफला, मुलेठी, सौंठ, सेधा नमक डालकर पानी को गर्म करें और गार्गल करें। जो सामग्री न मिलने उसे छोड़कर भी गार्गल करें, लाभकारी होगा।

मेथी का पानी : वायरस गले के बाद फेफड़े में भी पहुंचता है। ऐसे में रोजाना रात को मुट्ठीभर मेथी के दाने पानी में भिगों दें। सुबह खाली पेट पीएं। यह प्यूरिफायर का काम करता है। टॉक्सिन शरीर से बाहर करता है।

सेल्फ चेकअप

गहरी सांस लें, कम से कम 20 सेकंड तक रोंके। अगर आपको खांसी आती है या सांस फूल आजी है, तो रोग के किसी संदिग्ध कारक के बारे में सोचें।

नींद : रोजाना सात–आठ घंटे की नींद भी इम्युनिटी बढ़ाती है। ऐसा करने से शरीर में प्रोटीन भी बढ़ता है।

जल ही जीवन है

–पूरे दिन घूंट–घूंट करके गुनगुना पानी पिएं। 24 घंटे में कम से कम दो लीटर।

–घूंट–घूंट करके गर्म ग्रीन टी, रसम या गर्म सब्जी का सूप पीएं।

–सौंठ, काली मिर्च, पिप्पली 5–5 ग्राम और तुलसी की 10 पत्तियां एक लीटर पानी में तब तक उबाले जब तक यह आधा लीटर न रह जाए। फिर गरम गरम घूंट–घूंट करके पीएं। दिन में कई बार इसे आजमाएं।

–तुलसी, अश्वगंधा, आंवला, गिलोय, लहसन, मुलेठी, सहजंन की पत्ती समान मात्रा में लेकर पाउडर बनाकर रख लें। दिन में दो बार पांच–पांच ग्राम की मात्रा में गर्म पानी से लें। यह भी कारगर है।

–8 से 10 लहसुन की मीडियम साइज की कलियां एक लीटर पानी में तब तक उबालें जब तक पानी आधा लीटर न रह जाए। इसे घूंट घूंट पी सकते हैं।

–नाक में अणु तेल या तिल तेल का नस्य लें यानी दोनों नथुनों में इनमें से किसी एक तेल की दो–दो बूंदें डालें।

भोजन में क्या लें

–खाने में प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ लेने चाहिए। पनीर मिले तो जरूर लें।

–सोयाबीन, हरी सब्जियां, नींबू, दाल और दही खाएं।

–खजूर धोकर और आंवले के मुरब्बे का सेवन करें।

–खजूर में आयरन के साथ पौष्टिक होते हैं, जो लाभदायक हैं।

–डायट पर खर्चा ज्यादा दिखे तो आंवले का मुरब्बा लें।

–ब्रेड पर शहद लगाकर लें।

भारत में अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता

–प्रो. नईम का मनना है कि रोग प्रतिरोधक क्षमता शहरी लोगों की तुलना में ग्रामीणों में अधिक होती है।

–कोरोना वायरस का यूरोप–अमेरिका जैसा असर भारत में नहीं। ये रोग प्रतिरोधक क्षमता का असर है।

–दूसरे मुल्कों की तुलना में अपने देशवासियों में ये क्षमता अधिक है।

गर्म पानी का सेवन करें

–व्यक्ति के लिए गर्म पानी रोगों से बचने का सबसे बेहतर उपाय है। लगातार गर्म पानी का सेवन करते रहें।

कपूर को पानी में रखें

–नवरात्र में घर–घर हवन हो रहे हैं। लोग अपने घरों में पानी से भरी कटोरी में कपूर रख दें।

–कपूर की महक पूरे वातावरण को शुद्ध करती है। सांस के जरिये जो ऑक्सीजन हम लेंगे, वो भी शुद्ध होगी।

–कोरोना संक्रमण से बचने के लिए हाथ साबुन से धोते रहें। लोगों से मिलें नहीं। घर से कतई न निकलें।

संकट और एकजुटता

कोरोना विषाणु के संक्रमण को फैलने से रोकने और संक्रमितों को समुचित उपचार उपलब्ध कराने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों की कोशिशें निस्संदेह सराहनीय हैं। समय रहते इस दिशा में पूर्ण बंदी जैसा कठोर कदम उठाया गया, जिस पर राजनीतिक स्वार्थों को परे रख कर सभी राज्य सरक. ारों ने सहयोग का रुख अख्तियार किया। उसी का नतीजा है कि दूसरे देशों की तुलना में हमारे यहां इस विषाणु का प्रकोप अधिक नहीं फैलने पाया है। स्वाभाविक ही राज्य सरकारों के इस सहयोगात्मक रुख की प्रधानमंत्री ने तारीफ की और एकजुट होकर काम करने के लिए उन्हें साधुवाद दिया। कोरोना संक्रमण पर काबू पाने के लिए की जा रही कोशिशों के दौरान यह दूसरा मौका था, जब प्रधानमंत्री सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से मुखातिब थे। उन्होंने इस समस्या से पार पाने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर मुख्यमंत्रियों से जानकारी हासिल की और उन्हें देश के सामने एक साझा लक्ष्य के तहत काम करने की अपील की। इसमें उन्होंने कोरोना संक्रमितों की पहचान करने, उन्हें अलग–थलग कर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने पर जोर दिया। पूर्ण बंदी के नौ दिन हो गए हैं, पर मामले अभी सामने आ रहे हैं, इसलिए प्रधानमंत्री की चिंता समझी जा सकती है। दरअसल, पूर्ण बंदी की घोषणा के बाद कई जगहों पर लोगों की लापरवाही और मनमानी देखी गई। सामाजिक दूरी बनाने की दरकार दरकिनार होती देखी गई। फिर हजारों की संख्या में प्रवासी मजदूर अपने घरों की तरफ लौटने लगे, जिससे दूर–दराज तक इस संक्रमण के फैलने की आशंका गहरी हो गई। हालांकि इनमें से बहुत सारे लोगों को जगह–जगह रोक लिया गया, पर फिर भी अनेक लोग अपने गांव पहुंच गए, जिससे संक्रमण का दायरा फैलने का भय बना हुआ है। फिर निजामुद्दीन के मरकज और दिल्ली की दूसरी मस्जिदों में बाहर से आकर बड़ी संख्या में ठहरे तबलीगी जमात के लोगों में से सैकड़ों के कोरोना संक्रमित पाए जाने, उनमें से लौट कर अपने घर गए कई लोगों के संक्रमण से मर जाने का खुलासा होने के बाद चिंता और गहरी हो गई है। इनमें से बहुत सारे लोग देश के विभिन्न हिस्सों में धर्म प्रचार के लिए गए थे। फिर जो लोग अपने घर वापस गए, उनके जरिए यह संक्रमण कितने लोगों तक पहुंचा होगा, इसकी पहचान करना अभी मुश्किल बना हुआ है। ऐसी लापरवाहियों और मनमानियों के चलते पैदा हो गए खतरे के मद्देनजर सरकारों से चौकसी की अपेक्षा बढ़ गई है। प्रधानमंत्री के संबोधन से मुख्यमंत्रियों को निस्संदेह बल मिला होगा। यह अच्छी बात है कि इस संकट की घड़ी में सभी राज्य सरकारों ने एकजुटता दिखाते हुए अपने–अपने स्तर पर सक्रियता दिखाई और इस समस्या से पार पाने के लिए हर जरूरी कदम उठाए। प्रवासी मजदूरों के घर लौटने जैसी स्थिति में जरूर उत्तर प्रदेश और दिल्ली सरकार के बीच तालमेल न बन पाने के कारण कुछ अव्यवस्था हुई थी, पर ज्यादातर मामलों में सहयोग का ही रुख देखा जा रहा है। ऐसे मौकों पर राजनीतिक स्वार्थ के बजाय एकजुटता का प्रदर्शन बेहतरी के प्रति आश्वस्त करता है। फिलहाल सबसे बड़ी चुनौती कोरोना विषाणु को फैलने से रोकने की है, उस पर जितनी जल्दी काबू पाया जा सकेगा, उतनी ही जल्दी जिंदगी अपनी पटरी पर लौटेगी और रुके हुए कामकाज शुरू हो सकेंगे। अगली चुनौती अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की होगी।

उद्योग विहार

निष्पक्ष गारिक रागाचार पत्र

05 P.

E-mail : udyogviharnp@gmail.com

गाजियाबाद, अप्रैल, 2020

पहले परीक्षण में सफल पाई गई कोरोना वैक्सीन

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

कोरोना वायरस (कोविड–19) से मुक. ाबले के लिए तैयार की जा रही एक संभावित वैक्सीन अपने पहले परीक्षण सफल पाई गई है। यह वैक्सीन इतनी मात्र में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया की उत्पत्ति करने में खरी पाई गई, जिससे इस खतरनाक वायरस को बेअसर किया जा सकता है। ईबायोमेडिसिन पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, परीक्षण में चूहे को जब पिट्सबर्ग कोरोना वायरस वैक्सीन दी गई तो इससे दो हफ्ते के अंदर वायरस के खिलाफ एंटीबॉडी की उत्पत्ति शुरू हो गई। अमे. रिका की पिट्सबर्ग यूनिवर्सिटी के प्रमुख शोधकर्ता एंडिया गैम्बोटो ने कहा, 'हम सटीक रुप से जानते हैं कि नए वायरस से कहां मुकाबला करना है।' शोधकर्ताओं का कहना है कि यह वैक्सीन एनिमल टेस्ट में सफल पाई गई है। अगले चरण में यह वैक्सीन इंसानों पर आजमाई जाएगी। परीक्षण कुछ माह में शुरू होने की उम्मीद है। अगर यह सफल पाई जाती है तो बाजार में वैक्सीन के आने में एक साल लग सकता है।

दूसरा ट्रायल शुरू करेगा डब्ल्यूएचओ

नई दिल्ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने शुक्रवार को कहा कि वह जल्द ही कोरोना वायरस वैक्सीन के लिए दूसरा ट्रायल शुरू करेगा। संगठन की दक्षिण–पूर्व एशिया की क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पूनम खेत्रपाल सिंह ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा कि डब्ल्यूएचओ जल्द ही सॉलिडरिटी ट्रायल के लिए दूसरा प्रोटोकॉल शुरू करने जा रहा है। इससे संक्रमण और वायरस के भविष्य के व्यवहार को समझने में मदद मिलेगी।

कई देशों में किए जाने वाले इस परीक्षण में शामिल होने के लिए भारत, इंडोनेशिया और थाईलैंड पहले ही हस्ताक्षर कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि ट्रायल के दौरान कोविड–19 के खिलाफ चार अलग–अलग दवाओं या दवा के संयोजन की सुरक्षा और प्रभावशीलता की तुलना की जाएगी। क्षेत्रीय निदेशक ने सॉलिडरिटी ट्रायल में भाग लेने के लिए इस क्षेत्र के देशों की सराहना की। डॉ. खेत्रपाल सिंह ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक उपक्रम है। यह कोविड–19 के उपचार में दवाओं के प्रभावी होने के बारे में नाटकीय रूप से आवश्यक समय को कम करेगा। जितने अधिक देश इसमें शामिल होंगे, उतनी ही तेजी से हमारे पास नतीजे आएंगे। उन्होंने सभी देशों से इस परीक्षण में शामिल होने का अनुरोध किया।

नई दवा में दिखी कोरोना से मुकाबले की उम्मीद

वैज्ञानिकों को परीक्षण के दौर से गुजर रही एक नई दवा में कोरोना वायरस (कोविड–19) से मुकाबले की उम्मीद की किरण दिखी है।

यह दवा कोशिका के स्तर पर वायरस का रास्ता रोकने में प्रभावी पाई गई है। इस दवा के विकास से कोरोना का उपचार संभव हो सकता है। सेल जर्नल में प्रकाशित यह अध्ययन कोविड–19 की वजह बनने वाले सार्स–कोवी–2 के अहम पहलुओं पर नई रोशनी डालता है। कोशिका स्तर पर वायरस की पारस्परिक क्रियाओं के बारे में जानकारी मिलने के साथ ही अध्ययन से यह भी पता चलता है कि वायरस किस तरह रक्त वाहिनियों और किडनी को संक्रमित करता है।

थर्ड पार्टी इंश्योरेंस प्रीमियम भुगतान की बढ़ी मोहलत

नई दिल्ली। वाहन मालिकों को थर्ड पार्टी मोटर इंश्योरेंस प्रीमियम के भुगतान के लिए 21 अप्रैल तक की मो. हलत मिल गई है। बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडा) ने एक सकरुलर में कहा है कि कोरोना संकट के चलते देशव्यापी लॉकडाउन की वजह से इंश्योरेंस प्रीमियम भुगतान की अवधि बढ़ाई गई है। इसके तहत जोखिम कवर उसी दिन से शुरू हो जाएगा, जिस दिन नवीनीकरण की तिथि थी। सकरुलर के मुताबिक जिन वाहनों के थर्ड पार्टी इंश्योरेंस की अवधि 25 मार्च से 14 अप्रैल के बीच है, उन्हें प्रीमियम भुगतान के लिए 21 अप्रैल तक की मोहलत दी जाती है। इरडा ने जनरल इंश्योरेंस कंपनियों से भी कहा है कि वे प्रीमियम भुगतान की प्रक्रिया आसान करने के पर्याप्त उपाय करें। इसके साथ ही इरडा ने स्वास्थ्य बीमा कंपनियों से भी कहा है कि वे लॉकडाउन की अवधि के दौरान खत्म हो रही वैधता अवधि वाली बीमा योजनाओं की नवीनीकरण तिथि बढ़ाएं।

कोरोना का 44 फीसद कंपनियों पर मामूली असर

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। कोरोना महामारी से 44 फीसद कंपनियों पर खास असर नहीं होगा, जबकि 36 फीसद कंपनियों पर इसका मध्यम असर देखने को मिलेगा। हालांकि 20 फीसद कंपनियां काफी अधिक प्रभावित हो सकती हैं। मूडीज की तरफ से जारी सर्वे में यह जानक. ारी सामने आई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि कोरोना फैलने की वजह से इंटरनेट सर्विस कंपनियों से लेकर ऑनलाइन रिटेल व गोल्ड माइ. निंग तक पर सकारात्मक असर पड़ने की संभावना है।

रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना से सबसे अधिक प्रभावित होने वाली 20 फीसद कंपनियां एयरलाइंस, ऑटोमोटिव, गेमिंग, रिटेल व हॉस्पिटैलिटी, ऑयल एंड गैस व ग्लोबल शिपग क्षेत्र की हैं। कोरोना वायरस से मध्यम रूप प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में प्रॉपर्टी, मेटल व माइनिंग, स्टील, प्रोटीन व एग्रीकल्चर, कॉमर्शियल प्रॉपर्टीज, ऑयल फील्ड सर्विस, बेवरेज, केमिकल्स, रिफाइनिंग, नेचुरल प्रोडक्ट्स शामिल हैं। वहीं, मध्यम रूप से प्रभावित होने वाली 36 फीसद कंपनियां इन्हीं क्षेत्रों से ताल्लुक रखती हैं। जिन 44 फीसद कंपनियों पर कोरोना का खास असर नहीं दिखने वाला है, वे मुख्य रूप से आइटी, टेलीकॉम व मीडिया, कंस्ट्रक्शन व इंजी. नियरिंग, कंज्यूमर प्रोडक्टस, आइएचएस, पैकेजिंग व पैकेज्ड गुड्स क्षेत्रों की हैं। मूडीज की रिपोर्ट में कहा गया है कि कोरोना से सबसे अधिक प्रभावित होने वाली 20 फीसद कंपनियों में सबसे बुरा हाल एयरलाइंस कंपनियों का होने वाला है। इंटरनेशनल एयर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के मुताबिक वर्ष 2020 में एयरलाइंस के यात्रियों की संख्या में पिछले साल के मुकाबले 19 फीसद की गिरावट होगी। कोरोना के वैश्विक महामारी बनने के बाद कई देशों ने अपनी हवाई सीमा को बंद कर दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक एशिया की कई एयरलाइंस कंपनियों ने अपनी क्षमता में 50–90 फीसद तक की कटौती की है और कई देशों में सरकार की तरफ से हवाई यात्र पर रोक से इस क्षमता में और कटौती हो सकती है। मूडीज की रिपोर्ट के मुताबिक टेलीकॉम और मीडिया क्षेत्र की कंपनियों पर कोरोना का काफी कम असर होगा, लेकिन सप्लाई चेन व श्रमिकों के प्रभावित होने से इन क्षेत्रों पर भी दबाव दिखेगा। मूडीज की तरफ से यह सर्वे एशिया की 482 कंपनियों पर किया गया। इनमें से 97 कंपनियां (20 फीसद) सबसे अधिक दबाव में दिखी। इन 97 कंपनियों में से 67 फीसद कंपनियां कोरोना की वजह से अपने कारोबार में गिरावट का अनुमान लगा रही हैं।

भारतीय इकोनॉमी की एडीबी ने दिखाई सुनहरी तस्वीर

कहा-चालू वित्त वर्ष में चार फीसद से नीचे नहीं जाएगी विकास दर

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। कोरोना संकट के चलते दुनिया की अर्थव्यवस्था के महामंदी की ओर जाने की आशंकाएं जताई जा रही हैं। वहीं, भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका वैसा गंभीर असर नहीं दिख रहा है। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने अनुमान जताया है कि वैश्विक स्तर की कोरोना महामारी की रोकथाम के उपायों की वजह से चालू वित्त वर्ष 2020–21 में भारत की विकास दर चार फीसद के स्तर तक रह सकती है। हालांकि इसी दौरान एशिया क्षेत्र की विकास दर महज 2.2 फीसद रहेगी। बैंक ने अगले वित्त वर्ष (2021–22) में भारत की विकास दर 6.2 फीसद तक पहुंचने का भी अनुमान लगाया है।

एडीबी की तरफ से जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के फंडामेंटल्स मजबूत होने की वजह से अगले वित्त वर्ष (2021–22) के दौरान भारत की विकास दर में अच्छी तेजी देखी जा सकती है। बैंक के मुता. बिक भारत में कोरोना का व्यापक प्रभाव नहीं है। फिर भी, सरकार की तरफ से इसे रोकने के व्यापक कदम उठाने के साथ कॉरपोरेट और इनकम टैक्स में कटौती जैसी कई वित्तीय सुधार किए गए हैं। इन सबकी वजह अगले वित्त वर्ष में भारत की विकास दर 6.2 फीसद रहेगी।

एडीबी ने अपने अनुमान में कहा है कि कोविड–19 की वजह से इस साल की पहली तिमाही में चीन के उद्योग, रिटेल बिक्री और निवेश में भारी कमी आई है जिस कारण इस साल चीन की विकास दर 2.3 फीसद तक रह सकती है। लेकिन अगले वित्त वर्ष में चीन की विकास दर 7.3 फीसद रहेगी। कोरोना संकट की वजह से टूरिज्म पर आधारित पूर्वी एशिया और दक्षिण एशिया के देशों पर खासा असर दिखेगा। एडीबी ने कहा कि इस वर्ष कच्चे तेल की औसत कीमत 35 डॉलर प्रति बैरल रहेगी। पिछले वर्ष यह कीमत 64 डॉलर की थी।

रिपोर्ट इसलिए महत्वपूर्ण

एडीबी का यह अनुमान इस लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि शुक्रवार को ही फिच रेटिंग्स ने चालू वित्त वर्ष में भारत की विकास दर महज दो फीसद पर सिमटने का अनुमान लगाया है। अगर ऐसा होता है, तो यह पिछले तीन दशकों में देश की सबसे कम जीडीपी विकास दर होगी। पिछले सप्ताह मूडीज ने इस कैलेंडर वर्ष में भारत की विकास दर 2.5 फीसद रहने का अनुमान जारी किया था। हालांकि फिच ने इससे पहले भारत के लिए चालू वित्त वर्ष में 5.1 फीसद की विकास दर का अनुमान लगाया था। फिच रेटिंग की तरफ से जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि कोविड–19 की वजह से पूरी दुनिया मंदी की चपेट में आ रही है और पूरे साल यह मंदी जारी रहेगी। इस कारण भारत में एमएसएमई के साथ सेवा क्षेत्र काफी हद तक प्रभावित होंगे। वहीं उपभोक्ताओं की खपत में भी भारी कटौती देखी जा सकती है। इन कारणों से भारत की विकास दर चालू वित्त वर्ष में दो फीसद रह सकती है।

पीएमकेयर्स ऐट एसबीआइ असली, बाकी सब फर्जी

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। कोरोना संकट से लड़ने के लिए सरकार ने 'पीएम–केयर्स' नाम से एक फंड गठित किया है। लोग यूपीआइ के माध्यम से भी इसमें योगदान कर सकते हैं, जिसके लिए सरकार ने 'पीएमकेयर्सएसबीआइ' नाम से एक यूपीआइ आइडी जारी की है। एक तरफ देशभर की कंपनियां, संस्थाएं, प्रख्यात हस्तियां और आम जनता तक भारत सरकार द्वारा गठित इस फंड में योगदान दे रही हैं। दूसरी तरफ, संकट की ऐसी घड़ी को भी चंद साइबर ठग अपनी नाजायज कमाई का मौका बनाने से नहीं चूक रहे हैं। इस बारे में कई शिकायतें मिलने के बाद सरकार ने दानदाताओं को सतर्क करते हुए कहा है कि वे सिर्फ और सिर्फ 'पीएमकेयर्सएसबीआइ' पर ही दान दें। सरकार के साइबर सेक्योरिटी नियामक सर्ट–इन ने लोगों से कहा है कि साइबर ठगों ने पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी), एचडीएफसी बैंक, एसबीआइ, आइस. ाआइसीआइ बैंक और यस बैंक पर फर्जी यूपीआइ आइडी बना लिए हैं।

विभिन्न बैंकों के साथ ये आइडी 'पीएमकेयर' और 'पीएमकेयर्स' नाम से जारी किए गए हैं, जिनसे दानदाता अक्सर धोखा खा जाते हैं। सर्ट–इन के मुता. बिक सरकार ने जो राहत फंड गठित किया है, उसके लिए सिर्फ 'पीएमकेयर्सएसबीआइ' नामक यूपीआइ आइडी सही है। नियामक ने कहा कि इसके साथ ही दानदाता यूपीआइ के माध्यम से राहत कोष में रकम ट्रांसफर करते वक्त यह भी सुनिश्चित कर लें कि इसके साथ रजिस्टर्ड अकाउंट नाम 'पीएम केयर्स' दिखाई देता हो। अगर यूपीआइ आइडी के साथ पंजीकृत नाम कोई अन्य दिखे, तो वह आइडी फर्जी है।

ये सब फर्जी आइडी

पीएमकेयर@एसबीआइ
पीएमकेयर्स@पीएनबी
पीएमकेयर्स@एचडीएफसी बैंक
पीएमकेयर@यसबैंक
पीएमकेयर@वाईबीएल
पीएमकेयर@यूपीआइ
पीएमकेयर@आइसीआइसीआइ

उद्योग विहार

निष्पक्ष गारिक रागाचार पत्र

उद्योग–जगत

06 P.

E-mail : udyogviharnp@gmail.com

गाजियाबाद, अप्रैल, 2020

पत्तों की सरसराहट, चिड़ियों की चहचहाहट.. आसमां की नीलिमा

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। पत्तों की सरसराहट, चिड़ियों की चहचहाहट..आसमां की नीलिमा। सभी सुकून में हैं। ऊंची इमारतों के बीच किस्म किस्म की चिड़िया अपनी धुनों में गुनगुना रही हैं। आजकल घर में हैं, तो चिड़िया ही अलार्म की भूमिका निभा रही है। बाल. कनी में खड़े हो जाएं तो शहर बड़ा नजर आता है, मानो सुर्ख नीले आसम. ां का आलिंगन शहर से हो रहा है। सुर्ख नीला आसमां..आज की युवा पीढ़ी ने तो कभी नहीं देखा था। प्रकृति के इस रूप के साथ युवा अभिभूत हैं, सुखद अनुभूति में हैं। होना लाजिमी भी है क्योंकि प्रकृति भी तो बीसवीं सदी के सातवें दशक में लौट गई है। महानगरों से प्रकृति कैसी रूठी हुई थी, पशु, पक्षी विलुप्त थे। आसमान में सन्नाटा होता था, अब यही तोता, बुलबुल, कोयल करीब आ रहे हैं, नील गाय, हिरण सड़कों तक आ गए हैं।

यह कश्मीर की किसी झील की नहीं, दिल्ली में यमुना किनारे का नजारा है। राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन से राजधानी में प्रदूषण खत्म हो गया है। इसी बीच यह अद्भुत नजारा देखने को मिला।

शरीर की ऊर्जा बढ़ा रही है प्रकृति

सारे उद्योग, फैक्टियां बंद हैं, सड़कें खामोश हैं। एकाध बार बारिश भी हो गई तो आसमान में जो थोड़े दूषित पार्टिकल जमे थे वो भी खत्म हो गए। देखिए, अब महानगरों में तारे साफ दिखाई दे रहे हैं, आसमां तारों की चमचमाहट से जगमगाता है। और प्रफुल्लित कर देने वाली मंद–मंद भाव में बहती हवा मन को शीतलता और पर्यावरण की सुगंध के साथ शरीर को अलग ही तरीके से पोषित कर रही है। भले लॉकडाउन में बाहर नहीं जाना है, वॉक नहीं हो रही है, लेकिन प्रकृति आपके घर तक ऊंची इमारतों में रहने वालों तक के भी करीब आ रही है। निश्चित ही हर उम्र वर्ग के लोगों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी और जिससे कोरोना संक्रमण को हराने की ऊर्जा का संचार होगा।

घरों में भी राहत दे रहा प्रकृति का साथ

मेदांता अस्पताल की डॉक्टर सुशीला कटारिया भी मानती हैं कि प्रकृति का ऐसा साथ लोगों को घरों में भी राहत दे रहा है। पक्षी प्रेमी व डिस्टिक फॉरेस्ट ऑफिसर सुंदरलाल बताते हैं कि दफ्तर के काम से ही बाहर निकला था। इतने किस्म–किस्म के वाटर बर्ड आ रहे हैं। यही क्यों, मुंबई, बेंगलुरु, गुरुग्राम, चंडीगढ़, गाजियाबाद, नोएडा जैसे शहरों में लोग पक्षियों को अपने नजदीक महसूस कर रहे हैं। चंडीगढ़ में तो हिरण बकायदा सड़कों पर अठखेलियां करते हुए दिख रहे हैं। कभी जेब्रा क्रासिंग करते हैं तो कभी सड़क किनारे लगे पेड़ों के पीछे छिप जाते हैं।

सकारात्मक ऊर्जा का हो रहा संचार

दिल्ली चिड़ियाघर के क्यूरेटर रियाज खान भी मानते हैं कि पशु–पक्षियों को भी पर्यावरण में राहत का एहसास है, चारों तरफ कोई शोर नहीं है तो ऐसे में ये बाहर निकल कर आ रहे हैं। इससे लोगों को भविष्य के लिए भी संदेश है कि प्रकृति, पशु–पक्षी यह सब कितने प्यारे हैं, हमारे भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार के दाता हैं इनका हमेशा ख्याल रखें।

भविष्य का संदेश दे रहे पशु–पक्षी

ऊंची इमारतों के बीच तो बहुत ज्यादा पेड़ भी नहीं हैं, उसके बावजूद बालकनियों तक पक्षी आ रहे हैं। बारबेट, फ्लेमबेट वुडपेकर, जैसे पक्षियों की आवाज आसपास सुनने को मिल रही है। गाजियाबाद के राजनगर एक्सटेंशन की तरफ ऊंची इमारतों के आसपास फैले जंगल और खामोश सड़कों तक जानवर बेफिक्र घूमते दिख रहे हैं। कुछ दिन पहले वहां जैकाल दिखा। यमुना एक्सप्रेस–वे पर हिरण ही आ गया और नोएडा में सर्वाधिक भीड़भाड़ वाली जगह जीआइपी मॉल के पास नील गाय घूम रही थी। ये पशु पक्षी लॉकडाउन से पहले भी हमसे दूर नहीं थे, लेकिन हम भागदौड़ में, जिंदगी के शोर में, प्रकृति के हरण में इतने मशगूल थे कि ये सब डरे छिपे दूर–दूर रहते थे।

अगला पैकेज औद्योगिक जगत को देने की सरकार की तैयारी

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। कोरोना महामारी से उपजे इस संकट की घड़ी में गरीबों के खाने–कमाने के इंतजाम के बाद सरकार अब औद्योगिक जगत खासकर एमएसएमई के लिए अलग से पैकेज की घोषणा कर सकती है। इन घोषणाओं में छोटे उद्यमियों के यहां काम करने वाले कर्मचारियों की आधी तनख्वाह से लेकर उद्योग को गति देने के लिए अतिरिक्त फंड का सृजन शामिल हो सकता है। एमएसएमई को नकदी की समस्या दूर करने के लिए सरकार सभी सार्वजनिक कंपनियों को एमएसएमई के बकाया के निश्चित समय में भुगतान के लिए भी कह सकती है। कोरोना पर काबू के लिए गत 25 मार्च से जारी लॉकडाउन के कारण आवश्यक वस्तु व सेवा को छोड़ अन्य सभी प्रकार के उद्योग बंद है। इससे छोटे–छोटे उद्योगों के सामने अपने कर्मचारियों को वेतन देने का संकट खड़ा हो गया है। हालांकि सरकार ने हाल ही में 100 से कम कर्मचारियों वाली यूनिट के लिए राहत की घोषणा की है। अगर उस यूनिट में 90 फीसद कर्मचारियों का वेतन 15,000 रुपये प्रतिमाह से कम है तो सरकार उनके पीएफ में जमा होने वाली पूरी राशि का भुगतान करेगी। विशेषज्ञों के मुताबिक सरकार के इस फैसले का लाभ 2 लाख से भी कम यूनिट को मिलेगा जबकि जीएसटी नेटवर्क में पंजीकृत कारोबारियों की संख्या 1.10 करोड़ है। फेडरेशन ऑफ इंडियन स्मॉल एंड मीडियम इंटरप्राइजेज (फिस्मे) के महासचिव अनिल भारद्वाज के मुताबिक समस्या उन छोटी–छोटी यूनिटों या कारोबारियों की है जिनके यहां दो–चार कर्मचारी काम करते हैं

❑ अगली घोषणा में एमएसएमई सेक्टर को मिल सकती है अतिरिक्त राहत

और उनकी मामूली तनख्वाह है। इस लॉकडाउन से उन्हें अपने कर्मचारियों को वेतन देने की समस्या खड़ी हो गई है, क्योंकि उनका काम पूरी तरह से बंद है। भारद्वाज का कहना था कि जो कर्मचारी ईएसआइ दायरे में आते हैं, उन्हें लॉकडाउन में ईएसआइ अकाउंट से वेतन मिलना चाहिए। वित्त मंत्रलय सूत्रों के मुताबिक सरकार इस प्रकार के छोटे कर्मचारियों को एक निश्चित रकम वेतन के रूप में दे सकती है। नीति आयोग के साथ भी विचार–विमर्श किया गया है। मंत्रालय सूत्रों के मुता. बिक सरकार एमएसएमई में निवेश के लिए फंडों के फंड का एलान कर सकती है। एमएसएमई के उद्धार के लिए सरकार ने यूके सिन्हा कमेटी बनाई थी, जिनकी सिफारिशों में एक सिफारिश 10,000 करोड़ रुपये के फंड ऑफ फंड्स की स्थापना की थी।

सूत्रों के मुताबिक वित्त मंत्रालय ने इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया है जिस पर कैबिनेट नोट लाया जा सकता है। इस फंड की मदद से वेंचर कैपिटल व प्राइवेट इक्विटी फर्म को एमएसएमई में निवेश करने में मदद मिलेगी। सरकार एमएसएमई के बीच नकदी के प्रवाह को बढ़ाने के लिए सभी सरकारी कंपनियों को तत्काल प्रभाव से उनके बकाया भुगतान का भी निर्देश जारी कर सकती है। कई औद्योगिक संगठनों का मानना है कि सरकार से मदद नहीं मिलने की स्थिति में 20–25 फीसद एमएसएमई घोर संकट में फंस जाएंगे।

बिक्री के मोर्चे पर गहरी मुसीबत में ऑटो कंपनियां

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। देश की ऑटोमोबाइल कंपनियां अपने इतिहास के सबसे मुश्किल दौर में है। पिछले पूरे वर्ष के दौरान ग्राहक को तरसती ऑटो कंपनियों पर मार्च में लॉकडाउन की बड़ी मार पड़ी है। देश की सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी के कारों की बिक्री 47 फीसद कम हुई है तो टाटा मोटर्स की बिक्री 84 फीसद कम हुई है। आयशर के वाणिच्यिक वाहनों की बिक्री 83 फीसद, अशोक लेलैंड के ट्रकों व बसों की बिक्री में 90 फीसद की गिरावट देखी गई है। दूसरी कंपनियों के आंकड़े अभी आने हैं लेकिन उनसे भी कोई उम्मीद नहीं है। लॉकडाउन अगर अप्रैल मध्य तक समाप्त हो भी जाता है, तब भी कारों की बिक्री की रफ्तार बढ़ने की संभावना नहीं है। कोरोना वायरस की वजह से जो हालात पैदा हुए हैं, उसकी वजह से ना सिर्फ पिछले कुछ महीनों में लांच की गई कारों की बिक्री ठप हो गई है, बल्कि अगले तीन–चार महीनों के दौरान लांच की जाने वाले कम से कम छह कारों के भविष्य पर भी सवालिया निशान लग गए हैं। ह्युंडई की तरफ से लांच की गई नई क्रेटा ने बाजार में जबर्दस्त हलचल मचाई और लांचिंग से पहले ही इसकी 14 हजार बुकिंग हो गई थी। लेकिन लॉकडाउन की वजह से ना तो डीलरों को सप्लाई हो पा रही है और ना ही ग्राहकों को। कंपनी ने 23 मार्च, 2020 से अगले आदेश तक फैक्ट्री बंद कर दिया है। कुछ ऐसी ही स्थिति होंडा की है। इसने अपने बेहद मशहूर ब्रांड सिटी को नए रंग–रूप में उतारने की सारी तैयारी कर ली थी। लेकिन लॉकडाउन ने कंपनी के मंसूबों पर पानी फेर दिया। मारुति सुजुकी ने अपनी सबसे ज्यादा बिकने वाली कंपैक्ट सिडान डिजायर को नए अवतार में उतारा। लेकिन लॉकडाउन की वजह से इसकी बिक्री शुरू नहीं हो पाई है। बुधवार को मारुति सुजुकी ने बताया है कि मार्च में उसकी कुल बिक्री 47 फीसद घट गई है, जबकि समूचे वित्त वर्ष (अप्रैल, 2019–मार्च,2020) के दौरान बिक्री 16.1 फीसद गिरी है। वित्त वर्ष 2019–20 में कंपनी ने कुल 18,62,449 कारों की बिक्री की है।

लगातार नए मॉडल उतारकर बाजार में पैठ मजबूत बनाने की कोशिशों में जुटे टाटा मोटर्स ने इस वर्ष मार्च में महज 11,012 कारों की बिक्री की है जो मार्च, 2019 के मुकाबले 84 फीसद कम है। अगर पूरे वित्त वर्ष बात करें तो कंपनी के वाहनों की बिक्री में 35 फीसद की कमी हुई है। ट्रक व बस बनाने वाली दो कंपनियों आयशर और अशोक लेलैंड के बिक्री आंकड़े बेहद निराशा. जनक हैं। दोनों के वाणिच्यक वाहनों की बिक्री क्रमशः 83 फीसद और 90 फीसद घट गई है। लॉकडाउन की वजह से आने वाले महीनों में जिस तरह से औद्योगिक उत्पादन सुस्त रहने की संभावना है उसे देखते हुए वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री और घट सकती है।

अब इतिहास का हिस्सा बन गए 6 सरकारी बैंक

–उद्योग विहार (अप्रैल 2020)–

नई दिल्ली। ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स (ओबीसी), यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया (यूबीआइ), सिंडिकेट बैंक, आंध्रा बैंक, कॉरपोरेशन बैंक और इलाहाबाद बैंक अब इतिहास का हिस्सा हो गए हैं। केंद्र सरकार ने बैंकिंग सेक्टर में सबसे बड़े विलय का एलान करते हुए पिछले वर्ष 30 अगस्त को इन बैंकों को सरकारी क्षेत्र के चार अलग–अलग बैंकों में मिलाने का फैसला किया था। पहली अप्रैल यानी बुधवार से यह विलय लागू हो गया है।

विलय योजना के तहत ओबीसी व यूबीआइ को पीएनबी में, सिंडिकेट बैंक को केनरा बैंक में, आंध्रा बैंक व कॉरपा. रेशन बैंक को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में और इलाहाबाद बैंक को इंडियन बैंक में मिलाया गया है। इनके विलय की घोषणा करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा था कि भारतीय इकोनॉमी को पांच लाख करोड़ डॉलर का आकार देने में इस फैसले से मदद मलेगी। पीएनबी अब 11 हजार शाखाओं और 18 लाख करोड़ रुपये

❑ अप्रैल से चार बैंकों में छह बैंकों के विलय का फैसला लागू

की पूंजी के साथ देश का दूसरा सबसे बड़ा बैंक बन गया है। केनरा बैंक 15. 20 लाख करोड़ के पूंजी आधार के साथ देश का चौथा सबसे बड़ा बैंक बन जाएगा। आंध्रा बैंक व कॉरपोरेशन बैंक को मिलाने के बाद यूनियन बैंक का पूंजी आधार 14.59 लाख करोड़ का होगा और यह देश का पांचवां बड़ा बैंक होगा।

इलाहाबाद व इंडियन बैंक का संयुक्त कारोबार 8.08 लाख करोड़ रुपये का होगा और यह देश का सातवां सबसे बड़ा बैंक होगा। सरकारी बैंकों की संख्या 18 से घट कर 12 रह गई है। इससे पहले बैंक ऑफ बड़ौदा (बीओबी) में विजया बैंक व देना बैंक के विलय का फैसला किया गया था, जो पिछले वर्ष अमल में आ गया। बुधवार से इन बैंकों का विलय हो चुका है।

उद्योग विहार
निष्पक्ष मासिक समाचार पत्र
राष्ट्रीय

E-mail : udyogviharnp@gmail.com
गाजियाबाद, अप्रैल, 2020

लॉकडाउन से निर्मल हुआ गंगा नदी का जल

—उद्योग विहार (अप्रैल 2020)—

नई दिल्ली। कोरोना वायरस संक्रमण को रोकने के लिए लागू लॉकडाउन की वजह से देश की आबोहवा बदल रही है। भारत में हर तरह के प्रदूषण में खासी कमी आई है। 91 शहरों की हवा की गुणवत्ता 29 मार्च तक ही अच्छी और संतोषजनक श्रेणी में आ चुकी है। तीन–चार महीने पहले ही उत्तर भारत के जो शहर दमघोंटू हवा में जकड़े थे, वह अब शुद्ध हवा में सांस ले रहे हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की रिपोर्ट के अनुसार लॉकडाउन के कारण पावन गंगा नदी का जल भी फिर से निर्मल होने लगा है। इन दिनों उसका प्रदूषण कम हो रहा है। लॉकडाउन की वजह से नदी में औद्योगिक कचरे की डंपिंग में कमी आई है। गंगा का पानी ज्यादातर मॉनिटरिंग सेंटरों में नहाने के लिए उपयुक्त पाया गया है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार कोरोना वायरस के लिए लागू यातायात संबंधी प्रतिबंधों और औद्योगिक इकाइयों में कामकाज बंद किए जाने से देश में प्रदूषण के स्तर में खासी कमी आई है। लॉकडाउन से गंगा काफी स्वस्थ्य होती जा रही है क्योंकि इन दिनों औद्योगिक कचरा नहीं डंप हो रहा है। रियल टाइम वॉटर मॉनिटरिंग में गंगा नदी का पानी 36 मॉनिटरिंग सेंटरों में से 27 में नहाने के लिए उपयुक्त पाया गया है। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश समेत विभिन्न जगहों पर गंगा के पानी में काफी सुधार देखा गया।

मॉनीटरिंग स्टेशनों के ऑनलाइन पैमानों पर पानी में ऑक्सीजन घुलने की मात्र प्रति लीटर 6 एमजी से अधिक, बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड 2 एमजी प्रति लीटर और कुल कोलीफार्म का स्तर 5000 प्रति 100 एमएल हो गया है। इसके अलावा पीएच का स्तर 6.5 और 8.5 के बीच है जो गंगा नदी में जल की गुणवत्ता की अच्छी सेहत को दर्शाता है। सीपीसीबी के रियल टाइम वॉटर मॉनिटरिंग डाटा के अनुसार उसकी 36 मॉनिटरिंग यूनिटों में से 27 के आसपास पानी की गुणवत्ता वन्यजीवों और मछलियों के लिए उपयुक्त पाई गई है। इससे पहले, जब गंगा नदी के पानी की मॉनिटरिंग हुई थी तब उत्तराखंड से उत्तर प्रदेश में कुछ एंट्री प्वांट्स, पश्चिम बंगाल की खाड़ी में जाने तक पूरे रास्ते नदी का पानी नहाने के लिए भी ठीक नहीं था।

नदी की खुद को साफ रखने की क्षमता बढ़ी : पर्यावरणविद् और साउथ एशिया नेटवर्क ऑन डैम, रिवर, पीपुल (एसएएनडीआरपी) के एसोसिएट कोआर्डिनेटर भीम सिंह रावत ने बताया कि आर्गेनिक प्रदूषण अभी भी नदीं के पानी में घुल कर खत्म हो जाता है। लेकिन औद्योगिक इकाइयों से होने वाला रासायनिक कचरा घातक किस्म का प्रदूषण है जो नदी की खुद को साफ रखने की क्षमता को खत्म कर देता है।

लॉकडाउन के दौरान नदी की खुद को साफ रखने की क्षमता में सुधार के कारण ही जल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। ध्यान रहे कि भारत में 25 मार्च से तीन सप्ताह का पूर्ण लॉकडाउन लागू है। देश की 1.3 अरब आबादी को कोरोना के संक्रमण से बचाने के लिए उन्हें उनके घरों में ही रहने का आदेश है।

अत्यधिक प्रदूषित शहर भी नौ से शून्य के मानक पर आए : पिछले कुछ दिनों में देश भर के कई शहरों और कस्बों में हवा भी काफी साफ हो गई है। रिपोर्ट के मुताबिक 21 मार्च (जनता कर्फ्यू से एक दिन पहले) 54 शहरों में वायु की गुणवत्ता अच्छी और संतोषजनक थी। लेकिन 29 मार्च को देश के 91 शहरों में वायु प्रदूषण न्यूनतम हो गया। अत्यधिक प्रदूषित शहर भी नौ से शून्य के मानक पर आ गए।

देश में वायु प्रदूषण को बढ़ावा देने में जिम्मेदार औद्योगिक क्षेत्र जैसे–ट्रांसपोर्ट इंडस्ट्री, पावर प्लांट्स, निर्माण की गतिविधियां, बायोमास का जलना और सड़कों पर उड़ने वाली धूल और यहां तक कि घरों में होने वाली गतिविधियां (जैसे एसी चलाना आदि) भी बंद हैं। इसके अलावा डीजी सेट, रेस्त्रं, कचरा जलाने की गतिविधियां भी बंद हैं।

दिल्ली–एनसीआर की हवा में भी सुधार : साल भर से अधिकतम वायु प्रदूषण से जूझ रही दिल्ली में भी हवा में खासा सुधार आया है। यहां लॉकडाउन के दौरान पीएम10 और नाइट्रोजन आक्साइड में भारी कमी हुई है। दिल्ली में 22–23 मार्च को पीएम10 में 44 फीसद की कमी थी। हालांकि एनसीआर (नेशनल कैपिटन रेंज) में दिल्ली जितना फर्क नहीं पड़ा है। गुरुग्राम को छोड़कर एनसीआर में 22 मार्च को पीएम10 में कमी आई। पीएम 2.5 का स्तर अधिक रहा। नोएडा में छह फीसद और गाजियाबाद में नौ फीसद था।

- उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश समेत नदी में पानी हुआ नहाने लायक
- सीपीसीबी को 27 मॉनिटरिंग सेंटरों का पानी मिला साफ
- पानी की गुणवत्ता वन्यजीवों और मछलियों के लिए उपयुक्त

कानपुर के आसपास पानी बेहद साफ

विशेषज्ञों का मानना है कि देश में लॉकडाउन के बाद से गंगा नदी की के पानी की गुणवत्ता में काफी सुधार हुआ है। पर्यावरणविद विक्रांत टोंकद का कहना है कि औद्योगिक क्षेत्रों में खासा सुधार देखा जा रहा है, जहां बड़े पैमाने पर कचरा नदीं में डाला जाता था। उन्होंने कहा कि गंगा में कानपुर के आसपास पानी बेहद साफ हो गया है। इसके अलावा, गंगा की सहायक नदियों हिंडन और यमुना का पानी भी पहले से साफ हुआ है। हालांकि घरेलू सीव. रेज की गंदगी अभी भी नदी में ही जा रही है। इसके बावजूद औद्योगिक कचरा गिरना एकदम बंद ही हो गया है। इसीलिए पानी की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन के चलते आने वाले कुछ दिनों में गंगा के जल में और सुधार की पूरी उम्मीद है।

फ्लोरेंस नाइटेंगल ने 200 साल पहले हाथ धोने व स्वच्छता का महत्व बताया था

अतीत से

कोविड–19 से बचने के लिए हाथों की स्वच्छता के बारे में काफी ज्यादा प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। लेकिन ये कोई नई बात नहीं है। 200 साल पहले फ्लोरेंस नाइटेंगल ने भी हाथ धोने और स्वच्छता के महत्व को रेखांकित किया था। वह नर्स थीं जिन्होंने नर्सिंग में क्रांतिकारी बदलाव किए थे। उन्होंने 19वीं शताब्दी में चोटिल जवानों की नर्सिंग करने के लिए नर्सों को नया तरीके का प्रशिक्षण दिया था जिससे लाखों लोग की जान बचाई जा सकी थी।

घर की साफ–सफाई पर दिया जोर

नाइटेंगल ने अपने समय में ही कई तरह की बीमारियों को टालने के लिए घर की स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया था। नोट्स ऑन नर्सिंग सिर्फ एक नर्सिंग मैनुअल नहीं है बल्कि एक पब्लिक हेल्थ नियमावली है। यह बताती है कि हमें कैसे घरों को स्वस्थ रखना चाहिए। किताब में बताया गया है कि आग जलाने वाली जगह पर ज्यादा धुंआ नहीं होने देना चाहिए। न तो आग को बिल्कुल बुझने देना चाहिए और न ही ज्यादा कोयला डालना चाहिए। नाइटेंगल ने लिखा था कि लोगों को खिड़कियां और दरवाजे खोलकर रखने चाहिए ताकि स्वच्छ हवा का संचरण होता रहे। साथ ही अच्छा ड्रेनेज सिस्टम बनाना चाहिए ताकि कोलेरा और टाइफायड जैसी बीमारियों से बचा जा सके।

आइसोलेशन का महत्व बताया

1857 में नाइटेंगल क्रीमियन युद्ध के मरीजों को स्वस्थ करने के बाद जब लंदन लौटीं तब वो गंभीर रूप से बीमारी हो गईं। उन्हें थकान और दर्द की

वजह से खुद को आइसोलेट कर लिया। इस दौरान सिर्फ उसके घर के सदस्य ही उनके साथ थे। आइसोलेशन के दौरान उन्होंने घर से काम करने की शुरुआत की और चौंकाने वाली बात ये थी कि उनकी उत्पादकता बहुत बढ़ गई थी। ऐसे में 200 साल पहले नाइटेंगल द्वारा दी गई सीख काफी काम आ सकती है।

हाथों की स्वच्छता के बारे में भी जानकारी दी थी

नाइटेंगल एक नर्स थीं, उन्हें 60 साल की उम्र के बाद पता चला कि कई तरह की बीमारियां कुछ खास तरह के रोगाणुओं की वजह से होते थे। लेकिन, आपके नर्सिंग काल के दौरान उन्हें ये जरूर पता था कि नर्सों के लिए हाथों की स्वच्छता का पालन करना बहुत जरूरी है। 1860 में लिखी गई अपनी किताब नोट्स ऑन नर्सिंग में भी उन्होंने लिखा था, हर नर्स को अपने हाथों को दिन में कई बार अच्छे से धोना चाहिए। अगर वे अपना चेहरा भी धो सकीं तो और भी बेहतर होगा। 1853 से 1856 के बीच हुए क्रीमियन युद्ध में नाइटेंगल ने ब्रिटिश आर्मी अस्पतालों में हाथ धोने और स्वच्छता की अन्य क्रियाओं का क्रियान्वयन किया था। इस सुझाव को 1840 में हंगरी के इग्नाज सिमेलविज ने भी प्रसारित किया था।

पूर्व राज्यपाल ने अमेरिका से आए बेटे को एयरपोर्ट से लौटाया

—उद्योग विहार (अप्रैल 2020)—

नई दिल्ली। यह पहल लोगों के लिए प्रेरणा है जो आपाधापी में घरों के लिए भाग रहे हैं और कुछ सुनने के लिए तैयार नहीं दिखते। लॉकडाउन के दौरान जान को जोखिम में डालकर पैदल ही निकल पड़े हैं, जबकि सरकार 'जो जहां है, वहीं पर रहे' की अपील बार–बार कर रही है। कोरोना के संक्रमण का खतरा न बढ़े, इसलिए पूर्व राज्यपाल जस्टिस अंशुमान सिंह ने अमेरिका से आए अपने बेटे अरूण प्रताप सिंह को घर आने से मना कर दिया। अरूण अपनी बीमार मां को देखने के लिए प्रयागराज आने वाले थे। पिता की मनाही की वजह से चेन्नई एयरपोर्ट पर उतरने के बाद भी वह भारी मन से दिल्ली होते हुए वापस अमेरिका लौट गए।

दरअसल, विदेश से आने वाले लोगों से संक्रमण का खतरा ज्यादा है। इसीलिए शहर में मिशन रोड निवासी पूर्व राज्यपाल जस्टिस अंशुमन सिंह ने अपने बड़े बेटे अरूण प्रताप सिंह तथा उनके स्वजनों को घर आने से रोक दिया। अरूण अमेरिका में नार्थ कोईराना स्टेट के रोली शहर में रहते हैं। वहां पर मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब के साथ बिजनेस भी करते हैं। अरूण की पत्नी जया सिंह एक कॉलेज में पढ़ाती हैं और बेटा सिद्धार्थ पढ़ाई कर रहा है। बेटी अनु सिंह सेंट जियागो में पढ़ती हैं। अरूण पत्नी के साथ 14 मार्च को चेन्नई एयरपोर्ट पहुंचे थे। यही नहीं पूर्व राज्यपाल जस्टिस अंशुमान सिंह की पत्नी चंद्रावती देवी बीमार हैं। अरूण मां को देखना चाहते थे। बेटे ने चेन्नई एयरपोर्ट पर उतरने के बाद जब पिता से संपर्क साधा तो आदेश मिला कि वह वापस अमेरिका लौट जाएं। अरूण ने पिता का आदेश सिर माथे पर लिया। मां से वीडियो कॉलिंग की और लौटने की तैयारी में लग गए। दिल्ली से वापसी का टिकट 20 मार्च का था। अरूण 15 मार्च को मुंबई पहुंचे। वहां चिकित्सकीय जांच हुई फिर दिल्ली आए और तीन दिन रहने के बाद 20 मार्च को अमेरिका रवाना हुए। वहां पहुंचकर उन्होंने पिता से बात की।

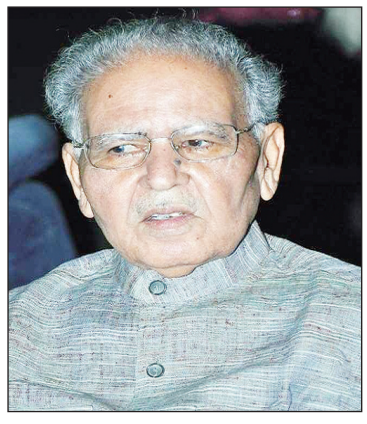

- बीमार मां को देखने अमेरिका से आए थे जस्टिस अंशुमान सिंह के बेटे
- वापसी टिकट न मिलने से पांच दिन चेन्नई, मुंबई और दिल्ली में बिताया

उद्योग विहार
निष्पक्ष गारिक रागाचार पत्र
देश–विदेश
08 P.
E-mail : udyogviharnp@gmail.com
गाजियाबाद, अप्रैल, 2020

कोरोना वायरस से सारे अंतरिक्ष मिशन जमीन पर

भविष्य की खोज पर बड़ा सवाल

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के प्रसार के कारण दुनिया के अनेक हिस्सों में चल रहे लॉकडाउन की स्थिति ने कई देशों के अंतरिक्ष मिशन भी जमीन पर ला दिए हैं। भविष्य की कई परियोजनाएं ठिठक गई हैं। कई के काम रुक गए हैं या रोक दिए गए हैं। चिंता कम्युनिकेशन, नेविगेशन तथा मौसम की सूचनाएं देने से जुड़े सैटेलाइटों को लेकर भी है। क्योंकि इन्हीं सैटेलाइटों के कारण आज हम एक आधुनिक समाज की कल्पना करते हैं। द अटलांटिक के अनुसार यह जानना जरूरी है कि कोरोना के प्रसार ने अंतरिक्ष क्षेत्र में भी पूरे मानव समाज को किस कदर पछाड़ दिया है।

मानव सभ्यता को आकार देने वाले मिशन : पिछले महीने अमेरिका में जब तक कोरोना का बड़े पैमाने पर प्रसार नहीं हुआ था, अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने जूपिटर और नेपच्यून के इर्दगिर्द चंद्र मिशनों समेत कई अन्य मिशनों के लिए फंड देने की घोषणा की थी। द अटलांटिक के अनुसार ये सारे मिशन मानव सभ्यता के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले हैं। इसलिए एजेंसी ने रिसर्च टीमों को इन महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के कंसेप्ट डिजाइन तैयार करने के लिए नवंबर तक का समय भी दे दिया था। लेकिन अब ऐसा होना संभव नहीं लगता है।

कई अंतरिक्ष कार्यक्रम स्थगित : दुनिया भर में स्पेस इंडस्ट्री से जुड़े कई प्रतिष्ठानों, एजेंसियों ने अपने कार्मिकों को घर से काम करने को कहा है। दक्षिणी अमेरिका में स्थित एक यूरोपीय स्पेसपोर्ट ने आगामी सभी लांच स्थगित कर दिए हैं।

नासा ने अपने एक बड़े स्पेस टेलीस्कोप की टेस्टिंग रोक दी है, जिसे अगले साल लांच किए जाने की योजना बनी थी। द अटलांटिक के अनुसार इसी तरह रूसी और यूरोपीय स्पेस एजेंसियों की एक संयुक्त परियोजना में देरी होगी, जिसके तहत मंगल पर जीवन की खोज के लिए एक रोवर भेजा है। इस तरह से कोविड–19 ने न सिर्फ इन परियोजनाओं को पलीता लगाया है बल्कि मानव जगत को इस ग्रह तक सीमित कर दिया है।

भविष्य की खोज पर सवाल : अब बड़ा सवाल तो भविष्य की खोज की संभावनाओं को लेकर है। यूरोपियन स्पेस एजेंसी के महानिदेशक जान वोरनर कहते हैं कि अब उनकी प्राथमिकता धरती के करीब के उन सैटेलाइटों की है, जो कम्युनिकेशन, नेविगेशन और मौसम की भविष्यवाणी से जुड़े हैं, क्योंकि ये मानवता की सेवा में लगे हैं, जो मंगल पर रोवर भेजने से ज्यादा अहम है।

हालांकि वह मानते हैं कि इन परियोजनाओं का टाला जाना निराशा. जनक होगा लेकिन यह कोई बड़ी तबाही नहीं है। सैटेलाइट इंफ्रास्ट्रक्चर में व्यवधान का असर हमारी आधुनिक सभ्यता पर बहुत ही गंभीर हो सकता है। ये आशंका इसलिए उत्पन्न हुई है कि कुछ ही कार्मिकों को मिशन कंट्रोल में आने की इजाजत है। एजेंसी ने हाल ही में गहरे अंतरिक्ष में चार खोजों को बंद किया है। इनमें से दो मंगल की कक्षा के करीब हैं जबकि एक तो पिछले महीने ही लांच हुआ है।

नासा की फंडिंग पर सवाल : इन हालातों में नासा की फंडिंग को लेकर भी सवाल उठने लगे हैं। डेमोक्रेट्स इस बात को लेकर सशंकित हैं कि अभी की हालात में इन परियोजनाओं के लिए फंड के बारे में जनता को कैसे संतुष्ट किया जा सकेगा, जो कोरोना के कारण भारी मुसीबत झेल रहे हैं। हालांकि नासा के एडमिनिस्ट्रेटर इसके बारे में कुछ अलग तरीके से सोचते हैं। उनका कहना है कि नासा का अंतरिक्ष अन्वेषण अमेरिकी अर्थव्यवस्था का वाहक है। इसके जरिए हजारों रोजगार पैदा होते हैं तथा व्यापार घाटा कम करने में भी मदद मिलती है और बड़ी संख्या में अमेरिकियों को इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने को प्रेरित करता है।

जानिए, कौन सा मास्क कितना सुरक्षित, मास्क पहनते और उतारते समय ध्यान में रखें ये बातें

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के खिलाफ शारीरिक दूरी का सिद्धांत अहम है। इसके लिए लॉकडाउन के बाद दूसरा सबसे सुरक्षित उपाय मास्क है। विश्व स्वास्थ संगठन समेत तमाम स्वास्थ्य विशेषज्ञों में ही मास्क को लेकर दो राय है कि इसे अनिवार्य किया जाना चाहिए या नहीं। हालांकि एक राय है कि मास्क पहनने में कोई बुराई नहीं है, लोग अपनी सुविधा के अनुसार मास्क जरूर पहनें। भारत में प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने भी लोगों को कहा है कि वे मास्क पहनें, ताकि कोरोना वायरस से लड़ाई में बड़ा सहयोग मिल सके। देश में एन–19 और एन–99 मास्क की कमी है। सरकार ने उपलब्ध संसाधनों को मेडिकल फील्ड में काम कर रहे लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए लगाने को कहा है। मगर देश में सर्जिकल मास्क काफी मात्रा में उपलब्ध हैं और इनकी सप्लाई भी काफी है। हालांकि इसमें एक दिक्कत है। सर्जिकल मास्क को कुछ घंटों के बाद बदल देना चाहिए। ऐसे में इसे पहनना भी आर्थिक रूप से महंगा साबित हो सकता है। ऐसे में सरकार ने सलाह दी है कि लोग घर पर सूती कपड़े के मास्क बनाएं और इन्हें पहनें, सिर्फ इन्हें हर बार प्रयोग के बाद अच्छी तरह धो लें। आइये जानते हैं आम लोगों के जीवनरक्षक इस मास्क के बारे में:

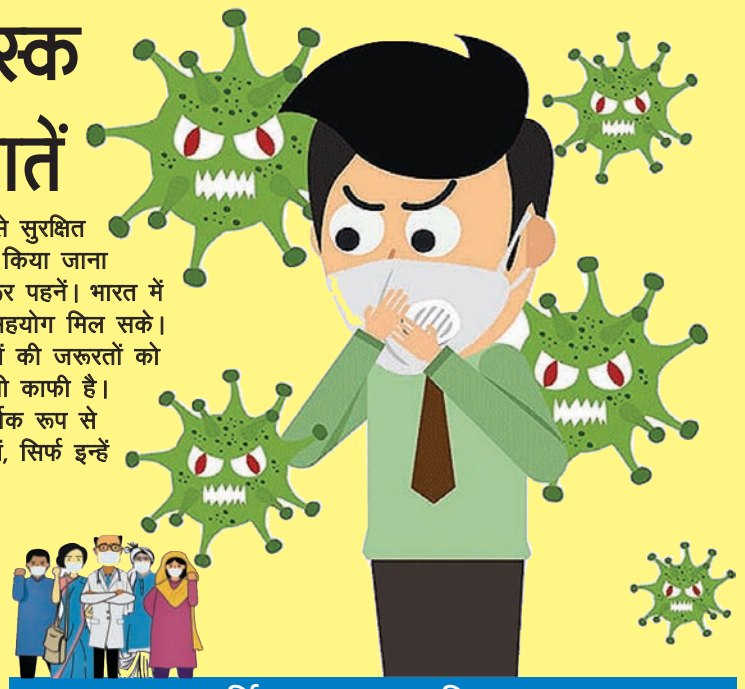

विश्व स्वास्थ्य संगठन का कथन

- मास्क हालात को बदलने में तभी मददगार हो सकते हैं जब उसे पहनने वाले लोग लगातार हाथ साफ करते रहें। हाथ को 70 फीसद एल्कोहल आधारित हैंड
- सैनेटाइजर या साबुन से लगातार साफ करते रहें। यदि आप मास्क पहनते हैं तो आपको यह पता होना चाहिए कि इसे कैसे पहनना चाहिए और इसका निस्तारण कैसे करना चाहिए

घरेलू मास्क बनाते समय रखें इन बातों का ध्यान

- मास्क बनने के बाद इसे अच्छी तरह धो लेना चाहिए और सुरक्षित रखना चाहिए
- कम से कम दो मास्क बनाने चाहिए, ताकि एक आप पहनें और एक को साफ कर लें
- वयस्कों को नौ इंच गुणा सात इंच और बच्चों के लिए सात गुणा पांच इंच का मास्क बनाना चाहिए

मास्क के फायदे

- हवा में कोरोना वायरस ड्रॉपलेट्स के जरिये तीन घंटे तक जिंदा रह सकता है, ऐसे में मास्क आपको पुख्ता सुरक्षा मुहैया कराता है
- सेल्फ क्वारंटाइन में रह रहे लोगों के साथ उनके आसपास मौजूद लोगों को हर समय मास्क लगाना चाहिए, ताकि किसी प्रकार का संदेह न रह जाए
- आप घनी आबादी वाले क्षेत्र में रहते हैं तो आपको मास्क पहनना चाहिए, इससे आप ड्रॉपलेट्स के जरिये फैलने वाले कोरोना वायरस से बचाव कर सकेंगें
- कोरोना वायरस पर्सन टू पर्सन फैलता है। ऐसे में यदि आप 1.5 मीटर दूरी के शारीरिक सिद्धांत का पालन करते हैं तो ड्रॉपलेट्स का आप तक पहुंचना बहुत कठिन हो जाता है

मास्क पहनते और उतारते समय ध्यान में रखें ये बातें

- चश्मा पहनते हैं, तो उसे सैनिटाइज करें
- मास्क के सामने वाले हिस्से पर हाथ न लगाएं
- फीते को कान पर या सिर पर उचित तरह से बांधें
- हाथ को अच्छी तरह हैंड सैनिटाइजर या साबुन से साफ करें
- मास्क और मुंह के बीच किसी प्रकार का अंतर नहीं रहना चाहिए
- फीते सबसे पहले खोलें और हाथ तुरंत सैनिटाइज करें या धो लें
- मास्क उतारते समय भी उसके सामने वाले हिस्से पर हाथ न लगाएं
- मास्क को गले में लटकाने की गलती न करें, इससे खतरा बहुत बढ़ जाएगा
- मास्क पर और मुंह पर हाथ न लगाएं, मास्क को एडजस्ट करने की कोशिश न करें

सर्जिकल मास्क का निस्तारण

- बैग को सुरक्षित तरीके से मेडिकल वेस्ट करने वाले नगर निगम या अस्पताल की गाड़ियों तक पहुंचाएं
- मास्क को उसके स्ट्रींग (फीते) को खोलकर मेडिकल वेस्ट के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले खास काले रंग के बैग में डालें
- हाथ को तुरंत 70 फीसद अल्कोहल वाले हैंड सैनिटाइजर से हाथ साफ करें या फिर साबुन से 40 सेकेंड तक हाथ धोएं

ताकतवर है घरेलू मास्क

- इससे सांस लेने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती है
- 70 फीसद तक कोरोना वायरस रोकने में घरेलू मास्क कामयाब रहता है
- इसे बनाना, साफ–सफाई और इसका सामान आसानी से उपलब्ध रहता है
- एक दोहरी तह वाला सूती मास्क 0.02 माइक्रोन तक के कणों को पूरी तरह रोक सकता है

कोरोना वायरस से बचाव के लिए मास्क पहनना कितना कारगर होगा, यह मास्क की दक्षता पर भी निर्भर करता है। आज बाजार में कई तरह के मास्क उपलब्ध हो गए हैं। इनमें अधिकांश ऐसे हैं, जो चिकित्सकीय दृष्टि से ज्यादा कारगर नहीं हैं। कोरोना से सुरक्षा के लिए सीमित मास्क ही हैं जो वायरस को रोकने में सक्षम हैं, बाकी बैक्टीरिया और धूलकण रोकने तक ही सीमित हैं।

मै. लीगल इन्फोशोल्यूशन्स प्रा0लि0, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक **"सत्येन्द्र सिंह"** द्वारा मै. बी.एफ.एल. इन्फोटैक लि. प्रेस, सी–9, सैक्टर–3, नोएडा से छपवाकर बी.ई.–243, (ग्राउण्ड फ्लोर) अवन्तिका, गाजियाबाद से प्रकाशित किया।
फोन : 0120–4122901 / 4108794 **मोबाइल नं. :** 9818036460 / 9818697406 **E-mail :** udyogviharnp@yahoo.com **संस्थापक :** शीतला प्रसाद सिंह **प्रधान सम्पादक :** सत्येन्द्र सिंह **सम्पादक :** बबिता सिंह **सह सम्पादक :** राजेश सिंह